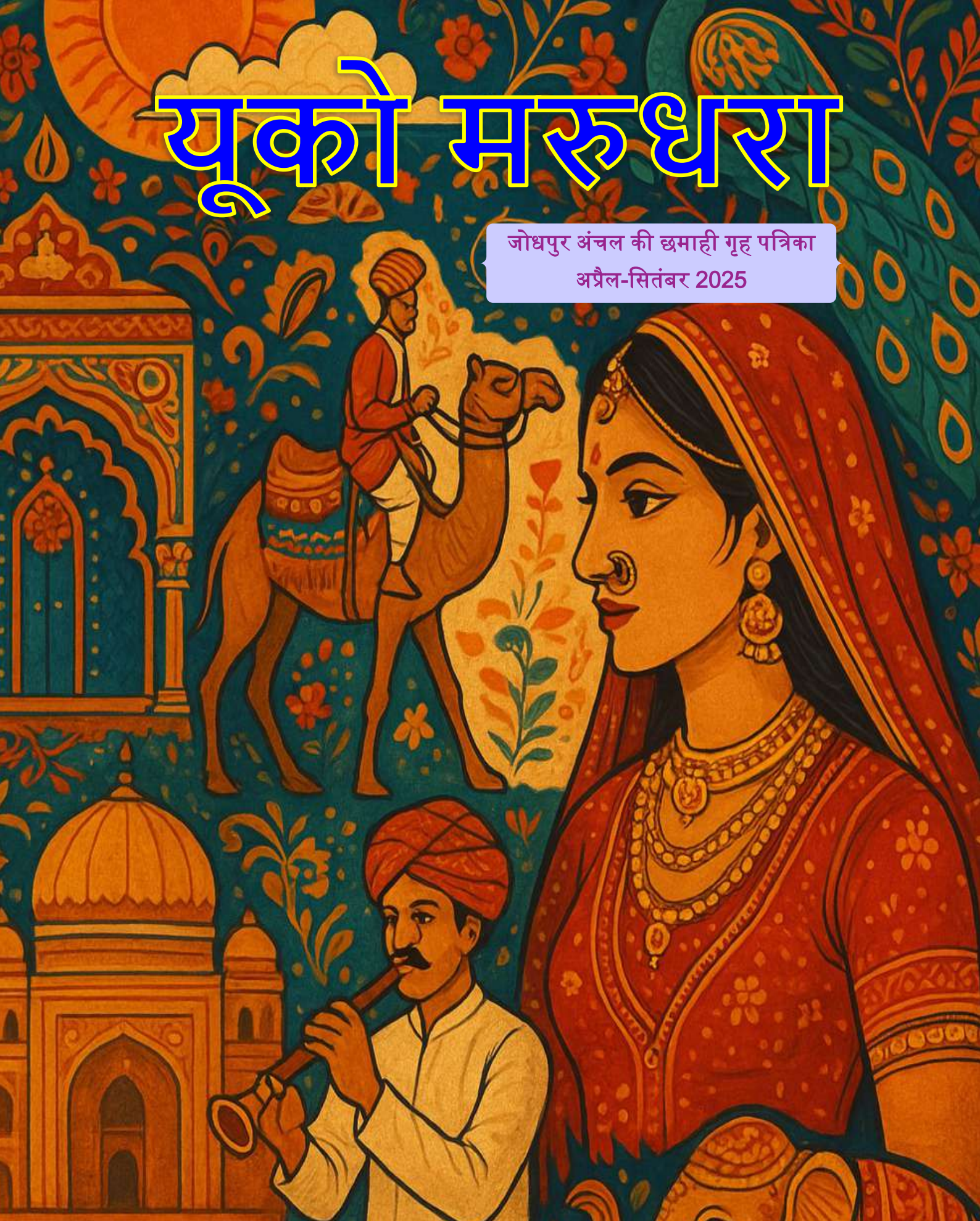


# यूको मरुधरा

जोधपुर अंचल की छमाही गृह पत्रिका  
अप्रैल-सितंबर 2025



75  
आजादी का  
अमृत महोत्सव

यूको बैंक  
(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK

(A Govt. of India Undertaking)

75  
आजादी का  
अमृत महोत्सव

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust



# यूको राजभाषा प्रतिज्ञा

“हम, यूको बैंक के स्टाफ-सदस्य, सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करते हैं कि हम भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु निरंतर कार्य करेंगे।

हम अपने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाने एवं उसकी स्थिति को उन्नत करने के प्रति सदैव सजग रहेंगे।

हम अपने सामूहिक प्रयास से राजभाषा के क्षेत्र में अपने बैंक को गौरवशाली बनाएंगे।

हम स्वयं राजभाषा में दृढ़तापूर्वक कार्य करेंगे एवं दूसरों को भी प्रेरित करेंगे।

हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि हम राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के उपबंधों एवं वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करके

राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी यूको बैंक को सर्वोत्कृष्ट श्रेणी का बैंक बनाएंगे।”

यूको बैंक  
(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK  
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

# यूको मरुधरा

जोधपुर अंचल की छमाही गृह पत्रिका  
अप्रैल-सितंबर 2025

## संरक्षक

जितिन चौधरी  
अंचल प्रमुख

## दिग्दर्शन

दिनेश शर्मा  
उप अंचल प्रमुख

## संपादक

सरस्वती कुमारी  
प्रबंधक - राजभाषा

एक टीम-एक स्वप्न -एक लक्ष्य

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के हैं,  
बैंक के नहीं।

## अनुक्रमणिका

### विषय

### पृष्ठ सं.

माननीय गृह मंत्री का संदेश	4
एम डी एवं सीईओ का संदेश	6
अंचल प्रमुख का संदेश	7
संपादकीय	8
कहानी - मन का खड्डा	9
राजभाषा कीर्ति पुरस्कार	13
मेहरानगढ़ किला	14
बैंकिंग में प्रयुक्त टिप्पणियाँ	16
व्यावसायिक दृष्टिकोण से जोधपुर अंचल	19
नराकास के तत्वावधान में प्रतियोगिता	21
बैंक के उत्पादों के प्रचार-प्रसार में हिन्दी भाषा का महत्व	22
बैंक में राजभाषा नीति का अनुपालन	24
राष्ट्रीय पदक विजेता	25
बाल वीथिका	26
व्यंजन विधि	27
चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर वाणी	28
वर्तमान समय में कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका	29
हिंदी माह	33
विशेष उपलब्धि	34
वार्षिक कार्यक्रम	35
कविता- आधुनिक जिंदगी पर व्यंग्य	37
लेख- प्रवासी भारतीयों के आँगन में हिंदी	38
कविता - माटी में खोज	42

राजभाषा विभाग, अंचल कार्यालय , जोधपुर  
461, पाल लिंक रोड, जोधपुर -342008  
ई-मेल: [zodhpur.ol@uco.bank.in](mailto:zodhpur.ol@uco.bank.in)



यूको बैंक  
(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK  
(A Govt. of India Undertaking)

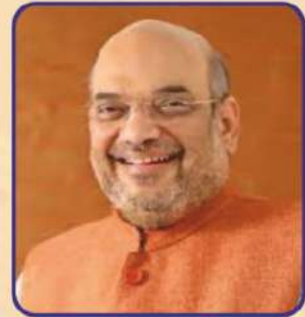


सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust



**अमित शाह  
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री  
भारत सरकार**



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा—प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान—विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल—मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत—प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव—देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए



इस पर विस्तार से विचार-विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार-प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी-20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13-14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई-गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी-नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:

"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"

अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2025

  
(अमित शाह)



## प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश



प्रिय यूकोजन,

आप सभी को हिंदी दिवस - 2025 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि वह जीवंत चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को स्वर देती है। इसी चेतना की स्वर्णिम उपलब्धि के रूप में राजभाषा हिंदी हमारी संस्कृति, संस्कार और अस्मिता को आलोकित करते हुए जन-जन के हृदय को जोड़ने वाला वह सेतु बन चुका है, जिस पर भारत विकास के सोपानों को सहजता से पार कर रहा है। हिंदी ने अपनी परंपराओं को सँजोते हुए अन्य भाषाओं के रत्नों को आत्मसात कर एक बहुरंगी गंगा-जमुनी संस्कृति का निर्माण किया है।

संघ की राजभाषा नीति के प्रति यूको बैंक की प्रतिबद्धता एक सुदीर्घ साधना है, जो वर्ष 1974 से निरंतर हिंदी के अनुशासित अनुपालन में अभिव्यक्त हो रही है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों से प्रतिवर्ष सम्मानित होना हमारी उसी निष्ठा का प्रमाण है। हमें गर्व है कि इस वर्ष हमारी हिंदी गृह पत्रिका "यूको अनुगूँज" को 'ग' क्षेत्र की सर्वोत्कृष्ट पत्रिका के रूप में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक) कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय) से अलंकृत किया गया है। साथ ही, हमारे 8 नराकासों में से 6 नराकासों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, यूको बैंक की सामूहिक भाषायी चेतना का दर्पण है। इन विजयी नराकासों के अध्यक्षों एवं सदस्य सचिवों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इस उपलब्धि को समस्त यूकोजन को समर्पित करता हूँ, जिन्होंने हिंदी को केवल भाषा नहीं, कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने में महती भूमिका निभाई है।

राजभाषा हिंदी केवल कार्य की भाषा नहीं, हमारी आत्मा की अभिव्यक्ति है। यूको बैंक परिवार का प्रत्येक सदस्य इसके अनुपालन में पूर्ण समर्पण और तन्मयता से जुड़ा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और पुरस्कार के माध्यम से हम न केवल हिंदी को कार्यालयीन जीवन में सहज बना रहे हैं, बल्कि तकनीकी नवाचारों के साथ उसे आधुनिक कार्य संस्कृति में भी आत्मसात कर चुके हैं। हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर मेरी यह अपेक्षा है कि सभी कार्मिक **हिंदी को केवल नियम नहीं, नियमित व्यवहार बनाएँ**, क्योंकि हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान है।

हिंदी को जनमानस की भाषा बनाने के लिए हमें दृढ़-संकल्प होकर कार्य करना होगा। यह सिर्फ सरकारी कार्यालयों की भाषा नहीं बनें अपितु हमारे देश की आम जनता के लिए **सरल, सुलभ और सुग्राही भाषा** बनें। इसके लिए हमें न केवल हिंदी को अपनाना है, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान और जिज्ञासा बनाए रखनी होगी। जब हम भाषाएँ सीखते हैं, तो संस्कृति से संवाद, सभ्यता से साक्षात्कार और समाज से आत्मीयता स्वतः जुड़ जाती है। जब हम भाषाओं का सम्मान करते हैं, तो हम संबंधों का विस्तार करते हैं और यही शक्ति भारत को एकसूत्र में पिरोती है।

हिंदी दिवस-2025 के इस पावन अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि कार्यालय का प्रत्येक कार्य राजभाषा हिंदी में पूर्ण तन्मयता और निष्ठा के साथ संपन्न करें। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम का अक्षरशः अनुपालन हमारी भाषायी प्रतिबद्धता का प्रतीक बने। प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हम न केवल प्रतिभा को मंच देंगे, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति उत्साह, प्रेरणा और सकारात्मकता का वातावरण भी निर्मित करेंगे। आइए, हम सब मिलकर इसे अपने कर्म की भाषा बनाएँ, हृदय से हिंदी अपनाएँ — यही सच्चा राष्ट्र सम्मान है।

(अश्वनी कुमार)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी



## अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय यूकोजन एवं पाठकगण,

मुझे अत्यंत हर्ष है कि यूको बैंक अंचल कार्यालय, जोधपुर की छःमाही पत्रिका यूको मरुधरा का यह नवीन अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। यह पत्रिका हमारे बैंक की गतिविधियों, उपलब्धियों, नवाचारों एवं हमारे सहयोगियों के सृजनात्मक योगदान को साझा करने का एक सशक्त माध्यम है।

इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल अपनी उपलब्धियों को प्रदर्शित करते हैं, बल्कि यह हमें हमारे मूल्यों, नीतियों और उद्देश्य की भी याद दिलाती है, जिनके साथ हम निरंतर अपनी बैंकिंग यात्रा में प्रगति कर रहे हैं।

बैंकिंग दृष्टिकोण से अगर देखें तो हमारा मुख्य उद्देश्य आस्तियों की गुणवत्ता को बनाए रखना तथा बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान करने के लिए सही दिशा में प्रयास किए जाए। वर्तमान समय में बैंकिंग जगत तकनीकी विकास और डिजिटलीकरण के युग में प्रवेश कर चुका है। ग्राहकों की अपेक्षाएँ एवं आवश्यकताएँ तेजी से बदल रही हैं। ऐसे में हमारा दायित्व है कि हम उन्हें नवीनतम तकनीकी साधनों से युक्त, त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएँ प्रदान करें। डिजिटल बैंकिंग, ग्राहक सुविधा, और सतत नवाचार ही हमारे विकास के आधारस्तंभ हैं।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। इसमें संकलित लेख, कविताएँ एवं अनुभव सभी के लिए ज्ञानवर्धक एवं उत्साहवर्धक सिद्ध होंगे।

अंत में, मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस अंक के प्रकाशन में योगदान दिया। आशा है कि यह अंक आप सभी को नई ऊर्जा, नवीन दृष्टिकोण और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा।

आप सभी को शुभकामनाएँ,

जितिन चौधरी  
अंचल प्रमुख



## संपादकीय

“यूको मरुधरा” के इस अंक में विगत छमाही में अंचल की व्यवसायिक गतिविधियों के साथ ही अन्य गतिविधियों को समेटने का प्रयास किया गया। हमारे स्टाफ सदस्यों की रचनाएँ भी इसमें प्रकाशित हुई हैं। मेरा यह मानना है कि लिखने से हम अपने अंदर के तनाव को कम करते हैं। बैंकिंग जॉब में तनाव होना स्वाभाविक है। अतः यह तनाव कम करने का एक बेहतर विकल्प माना जाता है। यह पत्रिका हम सभी की पत्रिका है इसकी उत्कृष्टता को बरकरार रखने के लिए हमारे सभी साथियों की सहभागिता आवश्यक है। आप सभी मेरा अनुरोध है कि कृपया हमारे अंचल की छमाही पत्रिका “यूको मरुधरा” में प्रकाशनार्थ रचनाएँ और अपनी शाखा की विभिन्न गतिविधियाँ हमें भेजें।

“यूको मरुधरा” न केवल हमारे बैंक की उपलब्धियों और गतिविधियों को साझा करने का एक मंच है, बल्कि यह राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को भी प्रकट करता है। बैंकिंग कार्य में हिंदी के प्रयोग से न केवल हमारे ग्राहकों के साथ संवाद में सरलता आती है, बल्कि हमारे कर्मचारियों के लिए भी कार्य क्षेत्र में इसे अपनाना अधिक सहज हो जाता है। हिंदी हमारी संस्कृति, हमारी पहचान और हमारे कार्य का अभिन्न हिस्सा है।

राजभाषा विभाग के रूप में हमारा उद्देश्य केवल भाषा का प्रयोग बढ़ाना नहीं, बल्कि इसे एक सहज प्रक्रिया बनाना है। यह आवश्यक है कि हिंदी का प्रयोग केवल औपचारिकता नहीं रहे, बल्कि सभी कर्मचारियों और ग्राहकों के दैनिक जीवन का अंग बनें।

मुझे पूरा विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आपको बहुत पसंद आएगा एवं पत्रिका में लेखों/कविताओं के माध्यम से व्यक्त विचारों से पाठकगण अवश्य लाभान्वित होंगे।

शुभकामनाओं सहित

सरस्वती कुमारी





ओंकार टाक  
वरिष्ठ प्रबंधक  
पाल रोड शाखा, जोधपुर

## "मन का खड्डा"

कस्बे से देहात की ओर निकलते रास्ते पर कस्बे के बाहर की ओर एक छोटी सी चाय की थड़ी मेरा घर और व्यावसायिक प्रतिष्ठान दोनों थे। उस तिराहे पर इक्का दुक्का दुकान थी जिसमें एक मेरी कुछ पत्थर व टाट की छत से बनी चाय की थड़ी थी। कस्बे से बाहर जाने वाले लोगों व बाहर से कस्बे में प्रवेश करने वालों को रास्ता बताना भी मेरा मुख्य व्यवसाय हो गया था। इसी बहाने मुझे भी चाय के एक-दो ग्राहक मिल जाते थे। मुझे कस्बे के हर गली-मोड़ का पता था। मैं रास्ते बताते समय ये भी बताने में सक्षम था फलां मोड़ पर जो रोड में खड्डा है उस से आगे किस दिशा में जाना है। लोग मेरी इस कला से अभिभूत थे पर मेरे लिए कुछ अजीब नहीं था। रोड में होने वाले खड्डे अक्सर अपनी जगह नहीं बदलते हैं चाहे उनको हटाने का दिखावे करने की कितनी ही कोशिश क्यों नहीं कर ली जाए। सड़क के खड्डे अपने आप को सरकारी जवाई मानते हैं जिनको इज्जत देने का दिखावा सरकारी महकमे बार-बार करते हैं।

तिराहे पर मेरी चाय की थड़ी के सामने नई बनी हुई सड़क में एक छोटे से खड्डे पर मेरी नजर पड़ी। शुरू में मैं रोज उसमें कुछ कंकड़ पत्थर डाल के उसको भरने की कोशिश करता था। पर ये खड्डा भी सरकारी महकमे के हाथों मरम्मत के बिना मानने को तैयार नहीं था। कुछ दिन में देखते ही देखते तेज रफ्तार व भारी वाहनों के गुजरने की वजह से खड्डा बड़ा होता गया। खड्डे की वजह से वहाँ से वाहनों को धीमी गति से गुजरते या रुक कर गुजरते देख मैं खुश भी था और स्वार्थ के आगे चुप भी था कि इस वजह से मुझे भी कुछ ग्राहक मिल जाते थे। कुछ समय बाद एक सरकारी महकमे की गाड़ी वहाँ आकर रुकी। मैं तुरंत अपनी खटिया से आधी नींद में ही उठ कर खड़ा हुआ। एक काला चश्मा चढ़ाये हुए साहिब गाड़ी से उतरे और उस खड्डे की तरफ बढ़े। उनके साथ कुछ लोग और भी थे जो साहिब के निर्देशानुसार उस खड्डे का नाप नक्शा करने लगे। मेरे मन में संशय उठने लगा कि ये लोग खड्डे को भर न दे, फिर मेरे यहाँ कोई ग्राहक रुकेगा ही नहीं। बहुत तेज धूप को देखते हुए जल्दी-जल्दी खड्डे का मुआयना करके साहिब मेरी थड़ी की तरफ बढ़े और टाट की छत के नीचे आकर सांस ली। मैं मन ही मन चाय का ऑर्डर लेकर चाय चढ़ा कर उबालने लगा और साहिब से पूछ भी लिया कि "साहिब अदरक चलेगा"? मेरा ख्वाब तब टूटा जब साहिब ने सिगरेट मांगी। उसके बाद सभी लोग साहिब की जीप में भर कर वापस चले गए। कुछ दिन बाद खड्डे की मरम्मत करने कुछ लोग आए जिनके पास कुछ सामान था और खड्डे को डामर से मरम्मत करके चले गए। जितना बड़ा खड्डा था उस से ज्यादा जगह पर तारकोल का घोल छिड़क कर उसके चारो ओर मार्किंग कर दी गयी। मुछों वाला ठेकेदार अपनी बिल बुक में खड्डे के मरम्मत के आकार को खड्डे से ज्यादा बड़ा दिखा कर खुश था और उसकी खुशी का हिस्सा मुझे भी मिला। जाने से पहले उसने अपने सारे मजदूरों को चाय पिलाने का फरमान दिया था। उन सबके जाने के बाद अब मैं उस खड्डे की ओर टुकुर-टुकुर देख कर सोच रहा था कि हर सड़क के खड्डे की किस्मत बदलती है; सरकारी जवाई के जैसे सम्मान मिलता है।

कुछ दिन बीते ही थे कि तिपाई जैसी मशीन लिए दो लोग मेरी थड़ी पर आकर रुके। मैंने चाय उबालते हुए उत्सुकता से उनसे मशीन के बारे में पूछा "ये किस काम में आती है?" उन में से एक अपनी आंखों पर पानी के छपके मारते हुए भीगी हुई आवाज में बोला "काका ये भूमिगत केबल विछाने के काम आती है। जो केबल हमने कुछ महीने पहले डाली थी उसमें कुछ फ़ाल्ट है उसको ठीक करने आए हैं।" (उसने पानी घूंट लेते हुए उस अभी-अभी ठीक हुए खड्डे की ओर इशारा किया)।

मैंने ये सुन कर मन ही मन में सोचने लगा कि क्या वो खड्डा फिर से खोदा जाएगा। मैंने चाय में एक इलायची ज्यादा डाली ये सोच कर कि फिर से खड्डा खोदने व मरम्मत के काम की वजह से मेरी चाय बिकेगी। कुछ देर में खड्डा खोदने की मशीन व लोग आए और फ़ाल्ट निकालने का काम शुरू हुआ। मैं टकटकी लगाए बैठा था कि कब चाय का ऑर्डर मिले। उस दिन चाय की अच्छी बिक्री हुई। उस खड्डे के लिए मैं भगवान को शुक्रिया अदा कर अपनी थड़ी के आगे खाट डाल कर सो गया। उस फ़ाल्ट वाले विभाग ने खड्डा खोद के वापस मिट्टी तो डाल दी पर फिर वही वाहन की आवाजाही से खड्डा बड़ा होने लगा। मैं उसको दिन-ब-दिन बड़ा होते देखता और वापस ठीक होने का इंतजार करने लगा। धीरे-धीरे वो खड्डा ज्यादा बड़ा होने की वजह से अब राहगीरों के दुर्घटना के शिकार होने की चिंता मुझे सताने लगी थी। एक दिन तेज रफ़्तार के कारण एक वाहन के पहिये के खड्डे में पड़ने से एक पत्थर ऐसा उछला की थड़ी पर बैठे एक व्यक्ति के कनपटी के पास से ऐसे निकला जैसे तोप का गोला हो। व्यक्ति डर के मारे कांपने लगा और मैं भी इस माजरे को देख हर पल इस डर में रहने लगा।

एक दिन फिर सुबह सुबह खड्डे को मरम्मत करने का काम हुआ और इस बार भी जमीन पर तो कम पर कागजों में बड़ा खड्डा दिखाया गया। इस बार भी खड्डे की मरम्मत अच्छे से नहीं हुई तो मैंने साहिब से पूछा कि इस बार खड्डे की मजबूत मरम्मत हुई है? साहिब अपने दाँतों में फंसे खैनी के टुकड़ों को निकालते हुए बोले "काका सड़क टूटने से पहले इसे तोड़ने वाले आ जायेंगे, हम फिर आपकी चाय पीने आयेंगे। अब तो आपकी चाय की आदत पड़ गयी है।" ये बोलते हुए साहिब अपनी जीप में सवार हो कर चले गये।

मैं अपनी थड़ी पर बेरोजगारी के पल ऊँघने में गुजार रहा था कि एक साइकिल की घंटी की आवाज सुनाई पड़ी। अपनी नज़रें सड़क की ओर करके देखा तो सामने से साइकिल पर टुंटीराम अपनी साइकिल को स्टैंड पर लगा कर गमछे से पसीना पोंछते हुए मेरी ओर आता दिखा। मैंने थड़ी पर उसको ठंडा पानी पिलाते हुए उसका स्वागत किया। टुंटीराम हमारे कस्बे में पानी की पारी का इंचार्ज था और यह ओहदा उसको विरासत में मिला था। इसके दादा के समय से यह ओहदा इनके परिवार के पास ही रहा है। अक्सर लोगों की उससे शिकायत रहती थी कि वो पानी की सप्लाई टाइम से नहीं देता हैं। "सरकारी काम ऐसे ही होते हैं" ऐसा बोल कर वह अपना रौब झाड़ देता था। मैंने उसको आज कस्बे से बाहर तक आने का प्रयोजन पूछा तो वो सरकारी आवाज में बोला "सब पता चल जाएगा, आप चाय ठीक से उबालो, अच्छे से अदरक डाल कर चाय बनाना; बड़े साहिब आ रहे हैं।" इतने में एक सफ़ेद बंद गाड़ी वहाँ आकार रुकी। टुंटीराम साहिब को सलाम देने सामने भाग कर उनके पास गया। जीप से थोड़ी दूर जाकर दोनों आपस में कुछ खुसर-फुसर करने लगे और फिर चाय पीने थड़ी पर आकर बैठ गये। थोड़ी देर में कुछ सरकारी मजदूर भी आ गये। धीरे-धीरे मुझे माजरा समझ आने लगा कि ये उस खड्डे को फिर से खोदने की फ़िराक में हैं। मेरे मन में उधेड़बुन चलने लगी और यकायक एक बात दृष्टिपटल पर दौड़ने लगी कि कहीं उस सड़क मरम्मत वाले साहिब की बात सच नहीं हो जाए। मजदूर आते ही खुदाई शुरू हो गयी। मैं भी खड्डे के पास चला गया और साहिब से पूछा कि क्या हुआ साहिब, खड्डा वापस खुदेगा क्या? साहिब ने बड़ी तफ़सील से बताया कि खड्डे के नीचे पानी का मुख्य ड्राईवर्टर है वो जिस कम्पनी का है उस से हमारा अनुबंध खत्म हो गया है और किसी और कम्पनी का सामान लगाने के फ़रमान आए है। ये सुन कर मैं कुछ समय कहीं खो गया था और मेरे पैर मुझे वापस अपनी थड़ी पर कब ले आए मुझे पता ही नहीं चला। सड़क मरम्मत महकमा दो बार इस खड्डे को मरम्मत कर के मरम्मत खर्च के दोगुने बिल के भुगतान कर चुका था और अब यह महकमा अपना काम करने के लिए फिर खोद रहा है। इस खड्डे की भी क्या जिजीविषा है कि भगवान किसी न किसी को भेज ही देता है नया जीवन देने। यही सोचते-सोचते मैं बर्तन धोने लगा कि इतने में आवाज आई "काके चाय पिला दे, देख नहीं रहे हो कब से काम कर रहे हैं।"



देखते ही देखते अपना काम करके खड्डे में रेती डाल कर जल विभाग वाले चले गये। टुंटीराम भी अपनी सड़किल की घंटी बजाते हुए कस्बे की ओर चला गया।

मेरा वही पुराना रिश्ता उस खड्डे से और वो वापस मेरे सामने दिनों दिन बढ़ रहा था। अब मुझे उसकी वजह से राहगीरों को होने वाली तकलीफ का एहसास होने लगा था। गाँव के कुछ लोग जो देहात से दूध देने कस्बा आते थे वो थोड़ी देर मेरे यहाँ बैठ कर हथार्ई करते थे। एक दिन मैंने मेरे मन में पल रहे इस दर्द को उनको बताया। मँझली पहाड़ी पर रहने वाले काका ने अपने तजुर्बे वाला एक सुझाव दिया कि एक पौधा इस खड्डे में लगा दो। उस पौधे को बचाने के लिए वाहन दूर से गुजरेंगे तो ये खड्डा बड़ा नहीं होगा और वे भी खड्डे से बच जाया करेंगे। मैं तुरंत कस्बे से एक पौधा लाया और उसमें लगा दिया। खड्डा वैसा ही रहा और पौधा बड़ा होने लगा। मन ही मन खुश था पर एक बात बहुत अखरती थी कि राहगीर जो थड़ी पर रुकते थे पौधे के पास, वो पौधे में पान की पीक थूकते थे जो मुझे पौधे का अपमान लगने लगा। एक दिन उस सुबह की हथार्ई में फिर से मेरी समस्या रखी। इस बार पहाड़ी के ढलान पर रहने वाले ढलकीराम ने तरकीब दी कि इस पर एक तख्ती लटका दो कि ये पौधा बहुत पवित्र हैं, इसका सम्मान करने से मनोकामना पूरी होती है। मैंने ऐसा ही किया पर ये तरकीब भी ज्यादा दिन चली नहीं। लोग आते जाते उस पौधे, जो अब पेड़ का रूप ले रहा था पर मन्त्रत मांग कर कपड़े, झंडे, चुटिया टाँगने लगे।

लोगों की पनपती आस्था से मेरी चाय की थड़ी बहुत बढ़िया चलने लगी पर मेरे मन में एक टीस थी कि ये तरकीब लोगों के अंधविश्वास को बढ़ावा दे रही है। एक दिन मैंने ये बात देहात वाली सुझाव समिति के समक्ष फिर रखी तो फिर से एक सुझाव आया कि इस पर एक तख्ती पर ये लिख दो कि यह पेड़ बहुत जहरीला है, इसके नीचे से न गुजरो। सुझाव थोड़ा अटपटा था पर उस झंडे वाले पेड़ को छुटकारा भी दिलाना जरूरी था इसलिए मैंने सुझाव को लागू कर दिया। धीरे-धीरे देखा कि लोग मेरी थड़ी पर रुकते हुए डरने लगे थे कि जहरीला पेड़ है उन पर इसकी छाया नहीं पड़ जाए। इस खड्डे, पेड़ और मेरा रिश्ता सालों चला। मैं उस पेड़ के नीचे खटिया लगा कर सोने लगा। देहात से आने वाले लोग मुझे इस पेड़ के बारे में किस्से कहानियाँ पूछने लगे कि कैसे ये पेड़ पवित्र से जहरीला हो गया। मैं मनगढ़ंत कहानियाँ सुनाता रहता था। उनको नहीं पता था कि लोगों को एक खड्डे से बचाने के लिए पेड़ लगाया, पेड़ को लोगों से बचाने के लिए अंधविश्वास बनाए और अंधविश्वास से पेड़ को बचाने के लिए पेड़ को जहरीला बना दिया।

धीरे-धीरे मेरी उम्र बढ़ने लगी और बुढ़ापे को हावी होते देख मैं अपनी थड़ी बंद करने की सोचने लगा। एक दिन धूप भरी दुपहरी में एक सफ़ेद कार उस पेड़ के नीचे आकार रुकी। मैं अपनी खाट से उठ बैठा और चाय के लिए लकड़ी के सहारे थड़ी के अन्दर जाने लगा। इतने में उनमें से एक नौजवान ने मुझे बैठाते हुए कहा "दा सा हम चाय अपने साथ लाये हैं आप बस यहाँ बैठ कर पीने दीजिये और आपको भी पिलायेंगे।" बातों-बातों में उस खड्डे से शुरू करके पेड़ तक की बातें उनको बताने लगा।

लंबे बाल वाले नवयुवक ने कहा "काका आप इस थड़ी को बंद करना चाहते हैं, एक सुझाव हमारा भी मान लो, ये थड़ी हमें चलाने को दे दो आपको महीना के किराए के पैसे मिल जायेंगे।" मेरी ढलती उम्र की हिसाब से सुझाव ठीक लगा और मैंने स्वीकार कर लिया और मेरी चाय की थड़ी इस शर्त पर उनको सौंप दी कि इस पेड़ को कुछ नुकसान नहीं होना चाहिए। कुछ महीनों बाद कुछ सरकारी मुलाजिमों ने मेरे घर के दरवाजे पर दस्तक दी। ये लोग वन विभाग से थे। एक संस्था के लोग मुझे उस पेड़ को लगाने व उसकी रक्षा के लिए सम्मानित करना चाहते थे पर उनकी एक जिद्द थी कि उस पेड़ के नीचे ही सम्मान समारोह करेंगे।

मैं भी अपनी थड़ी पर जाने को तो उत्साहित था इसलिए सुबह-सुबह नहा धो कर सिर पर पगड़ी बांध कर घर से निकल गया। दूर से ही मेरी नजरें मेरी थड़ी को ढूंढ रही थी। मैंने देखा की एक बहुत बड़े बोर्ड वाली थड़ी थी और उसके सामने एक विशालकाय पेड़। मन ही मन बहुत खुश हुआ कि आज ये पेड़ इतना बड़ा हो गया। मेरे पैर जल्दी-जल्दी चल रहे थे कि जल्द पहुंचूँ उस पेड़ के नीचे। कुछ दूसरे सरकारी महकमें भी वहाँ आए हुए थे स्वागत के लिए। जब दूर से मेरे स्वागत के लिए मालाएँ पहनाने की शुरुआत हुई तो कुछ चेहरे वो भी थे जो उस खड़े को बार-बार खोदने व मरम्मत करने आते थे। जब मैं पेड़ के नीचे पहुंचा तो मेरी आंखें फटी की फटी रह गयी। उस विशालकाय के पेड़ की हर टहनी के नीचे एक लटकती हुई टेबल थी जिस पर चाय के कप रख कर लोग चाय पीने का नायाब आनन्द ले रहे थे। ऐसे चमकदार लटकती टेबलों से पेड़ तो एक शहर बन गया था। बहुत साफ सफाई और नायाब तरीके से इस पेड़ के अस्तित्व के साथ चाय का धंधा आसमान छू रहा था। उस सम्मान समारोह में मुझे सरकार ने यह बोल के सम्मानित किया कि आपने हमारे महकमों को आपसी सामंजस्य न होने की वजह से सरकारी खर्च से बचने का आपने अपनी दूरदृष्टि से आईना दिखा दिया। मैं फलते फूलते पेड़ को देख कर इतना खुश हुआ कि मैंने चाय की थड़ी किराए की बजाय हमेशा के लिए उन नवयुवकों को सौंपने का ऐलान कर दिया। भीड़ को चीरता हुआ एक नवयुवक आगे आया और बोला “काका हमें चाय का धंधा नहीं करना था पर आपके पेड़ के प्रति प्रेम को देख कर हमने ये निर्णय लिया है।” इस धंधे के मालिक आप ही रहेंगे हम अपने खर्चे निकाल कर मुनाफे के पैसे बैंक खाते में जमा कर रहे हैं। आपके प्रकृति के प्रति प्रेम का कोई मोल नहीं है .... ऐसा कहते कहते उस नवयुवक ने काका को अपनी बाहों में भर लिया। काका के इस प्रकृति प्रेम के चर्चे और सम्मान चहुं दिशा में आग की तरह फैला और चाय के धंधे को एक नये स्टार्टअप के रूप में जाना जाने लगा।



\*\*\*\*\*



## CYBER SAFETY

TIP OF THE DAY






# BEWARE OF WHATSAPP SCREEN MIRRORING FRAUD



**❌ Do not accept request of screen sharing from strangers**

**🚫 Avoid financial transactions during screen sharing**

Disclaimer: The literature / images / materials (courtesy from various sources viz., internet, photo gallery etc.) used are strictly for the purpose of cyber literacy / education without any commercial purpose intended thereof.

**Report cybercrime at <https://cybercrime.gov.in> or Call 1930 for assistance.**



**यूको बैंक**  
(भारत सरकार का उपक्रम)  
सम्मान आपके विश्वास का



**UCO BANK**  
(A Govt. of India Undertaking)  
Honours Your Trust

**CISO OFFICE**

राजभाषा का प्रकाश, बैंक का विकास

12

यूको मरुधरा, अप्रैल-सितंबर 2025



# राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

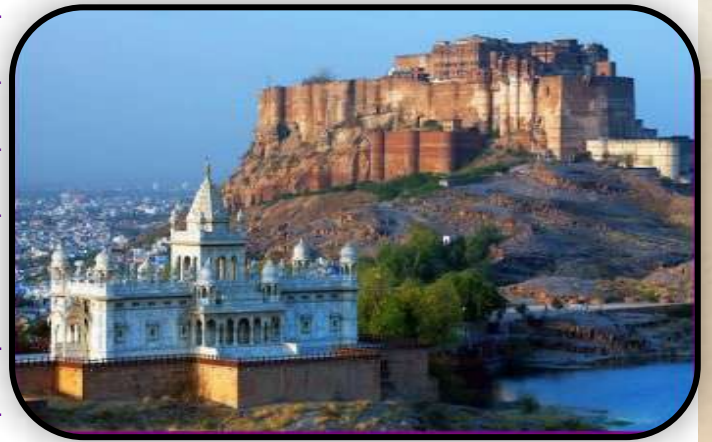


14 सितंबर 2025 को गांधीनगर, गुजरात में आयोजित हिंदी दिवस एवं पंचम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में यूको बैंक को पत्रिका श्रेणी में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (द्वितीय) तथा नराकास (बैंक), कोलकाता को नराकास राजभाषा सम्मान (द्वितीय पुरस्कार) प्राप्त हुआ, जिसे कार्यपालक निदेशक श्री विजयकुमार निवृत्ति कांबले जी ने श्री अर्जुन सिंह मेघवाल, केंद्रीय विधि एवं न्याय राज मंत्री, श्री दिनेश शर्मा, सांसद राज्य सभा एवं डॉ. आनंद रंगनाथन, वैज्ञानिक एवं लेखक के करकमलों से प्राप्त किया। इस अवसर पर यूको बैंक की पुस्तक "विकसित भारत @ 2047 – कतिपय क्षेत्रों की भूमिका" का विमोचन भी किया गया। यह यूको परिवार के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण उपलब्धि है।



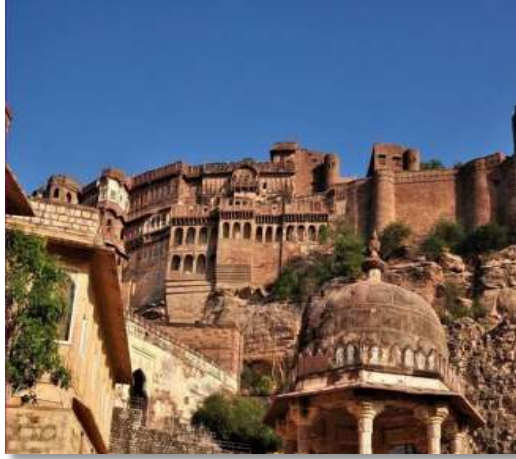
## मेहरानगढ़

मेहरानगढ़ किला भारत के राजस्थान में स्थित एक प्राचीन विशालकाय किला है जिसे जोधपुर का किला भी कहा जाता है। यह भारत के समृद्धशाली अतीत का प्रतीक है। मेहरानगढ़ किला एक बुलंद पहाड़ी पर 150 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह शानदार किला राव जोधा द्वारा 1459 ई0 में बनाया गया था। मेहरानगढ़ किला पहाड़ी के बिल्कुल ऊपर बसे होने के कारण राजस्थान राज्य के सबसे खूबसूरत किलों में से एक है। राजस्थान में कई और भी ऐतिहासिक इमारतें मौजूद हैं। लेकिन जोधपुर का मेहरानगढ़ किला इनमें सबसे खास है। 400 फीट की ऊंची बिल्कुल सीधी खड़ी चट्टान पर स्थित यह किला भारत के सबसे भव्य और विशाल इमारतों में से एक है। किले से जोधपुर का बेहतरीन नजारा और पाकिस्तान एकदम साफ दिखता है। इस किले के बारे में यह भी कहा जाता है कि साल 1965 में भारत और पाकिस्तान के बीच लड़ाई के दौरान सबसे पहले मेहरानगढ़ के किले को टारगेट किया गया था। यह किला दिल्ली के कुतुब मीनार की ऊंचाई (73मीटर) से भी ऊंचा है। मेहरानगढ़ किले की दीवारें 10 किलोमीटर तक फैली हैं। इनकी ऊंचाई 20 फुट से 120 फुट तथा चौड़ाई 12 फुट से 70 फुट तक है। इसके परकोटे में किलाम रास्तों वाले सात आरक्षित किला बने हुए थे। घुमावदार सड़कों से जुड़े इस किले के चार दरवाजे हैं। राव जोधा जी को अपने पिता की मृत्यु के बाद मंडोर का राज्य खोना पड़ा तब वे लगातार पंद्रह सालों तक मेवाड़ की फौजों से युद्ध करते रहे और 1453 ई. में उन्होंने मंडोर पर अधिकार किया। जिसके लिए राव जोधा उत्तराधिकारी बने थे। राव जोधा जोधपुर के राजा रणमल की 24 संतानों में से एक थे। शासन की बागडोर सम्भालने के एक साल बाद राव जोधा को लगने लगा कि मंडोर का किला असुरक्षित है। उन्होंने अपने तत्कालीन किले से 9 किलोमीटर दूर एक पहाड़ी पर नया किला बनाने का विचार प्रस्तुत किया। इस पहाड़ी को भोर चिड़िया के नाम से जाना जाता है, क्योंकि वहां बहुत से पक्षी रहते थे, राव जोधा ने 12 मई 1459 को इस पहाड़ी पर किले की नींव डाली महाराज जसवंत सिंह (1638-78) ने इसे पूरा किया। किले में सात दरवाजे हैं, जिन्हें पोल भी कहा जाता है। इनमें से एक जय पोल का निर्माण महाराजा मान सिंह ने 1806 में जयपुर और बीकानेर पर युद्ध में मिली जीत की खुशी में किया था। किले का अंतिम द्वार लोह पोल के बाईं ओर जौहर करने वाली रानियों के हाथों के निशान हैं। यहां 15 से ज्यादा रानियों की हाथों के निशान हैं, जिन्होंने 1843 में अपने पति महाराजा मान सिंह की मौत के बाद जौहर ले लिया था। किंवदंतियों की मानें तो, इस घटना से पहले भी 1731 में महाराजा अजीत सिंह की छह रानियों और 58 पटरानियों ने राजा के निधन के बाद जौहर कर लिया था।





राव जोधा द्वारा सन 1459 में सामरिक दृष्टि से बनवाया गया यह क़िला प्राचीन कला, वैभव, शक्ति, साहस, त्याग और स्थापत्य का अनूठा नमूना है। यह विशालकाय किला, पथरीली चट्टान पहाड़ी पर, मैदान से 150 मीटर ऊँचाई पर स्थित है और आठ द्वारों व अनगिनत बुर्जों से युक्त दस किलोमीटर लंबी ऊँची दीवार से घिरा है। बाहर से अदृश्य, घुमावदार सड़कों से जुड़े इस किले के चार द्वार हैं। किले के अंदर कई भव्य महल, अद्भुत नक्काशीदार किवाड़, जालीदार खिड़कियाँ और



प्रेरित करने वाले नाम हैं। इनमें से उल्लेखनीय हैं मोती महल, फूल महल, शीश महल, सिलेह खाना, दौलत खाना आदि। इन महलों में भारतीय राजवंशों के साज सामान का विस्मयकारी संग्रह निहित है।

इस किले में कुल सात दरवाजे हैं, जिनमें जयपाल (अर्थ – जीत) गेट का भी समावेश है, जिसे महाराजा मैन सिंह ने जयपुर और बीकानेर की सेना पर मिली जीत के बाद 1806 ईस्वी में बनाया था। फत्तेहपाल (अर्थ-जीत) गेट का निर्माण महाराजा अजित सिंह ने मुगलो पर जीत की याद में बनाया था।

किले पर पाए जाने वाले हथेली के निशान आज भी हमें आकर्षित करते हैं। दुर्ग के भीतर राजप्रासाद स्थित है। दुर्ग के भीतर सिलहखाना (शस्त्रागार), मोती महल, जवाहरखाना आदि मुख्य इमारतें हैं। किले के उत्तर की ओर ऊँची पहाड़ी पर थड़ा नामक एक भवन है जो संगमरमर का बना है। यह एक ऊँचे -चौड़े चबूतरे पर स्थित है। यहां आगंतुक दूसरे गेट पर युद्ध के दौरान तोप के गोलों के द्वारा बनाये गये निशानों को देख सकते हैं। कीरत सिंह सोडा, एक योद्धा जो एम्बर की सेनाओं के खिलाफ किले की रक्षा करते हुये गिर गया था, के सम्मान में यहाँ एक छतरी है। छतरी एक गुंबद के आकार का मंडप है जो राजपूतों की समृद्ध संस्कृति में गर्व और सम्मान व्यक्त करने के लिए बनाया जाता है।



**Avoid posting personal information like phone number, address & location on social media platforms as they can be misused by cyber criminal.**

Disclaimer: The literature / images / materials courtesy from various sources viz., internet, photo gallery, etc., used are strictly for the purpose of cyber literacy / education without any commercial purpose intended thereof.

Report cybercrime at <https://cybercrime.gov.in> or Call 1930 for assistance.

यूको बैंक  
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK  
(A Govt. of India Undertaking)  
Honours Your Trust

CISO OFFICE

**सामान्य टिप्पणियों के हिंदी पर्याय**  
**Hindi Equivalents of General Notings**

<b>GENERAL NOTINGS</b>	<b>सामान्य टिप्पणियां</b>
Accepted conditionally	सशर्त स्वीकृत
Accepted for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत
Acting in good faith	सद्भाव से कार्य करते हुए
Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए
Advice expected/awaited	सूचना की प्रतीक्षा है
Advice not clear	सूचना स्पष्ट नहीं है
After consultation with	से परामर्श करके
As a matter of fact	यथार्थतः, वस्तुतः
As a result of	के परिणामस्वरूप
As far as practicable	जहां तक व्यवहार्य हो
As far as possible	जहां तक संभव हो
As per details below	नीचे दिए ब्योरे के अनुसार
As recommended	यथा संस्तुत / यथा अनुशंसित
As the case may be	यथा स्थिति, जो भी स्थिति हो
Both days inclusive	दोनों दिन शामिल
By all means	किसी भी प्रकार से
Call for an explanation	स्पष्टीकरण मांगें
Cannot be permitted	अनुमति नहीं दी जा सकती
Circulate and then file	सर्कुलेट करके फाइल कर दीजिए
Clarification necessary	स्पष्टीकरण आवश्यक है
Condoned	क्षमा किया / क्षमा कर दिया
Consequent upon	के परिणामस्वरूप
Copy forwarded for information and necessary action	प्रति सूचना और आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रेषित
Deemed to be	समझा जाएगा
Delay regretted	विलंब के लिए खेद है
Deterimental to Bank's interest	बैंक के हित में नहीं



Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
Draft approved	प्रारूप अनुमोदित
Draft approved as amended	संशोधित प्रारूप अनुमोदित
Draft circular	परिपत्र का प्रारूप
Draft for approval	अनुमोदनार्थ प्रारूप
Duly filled in	विधिवत् भरा हुआ
During the course of discussion	विचार-विमर्श/चर्चा के दौरान
Early steps should be taken	शीघ्र उपाय किए जाएं
Enquiry may be completed and report submitted at an early date	जाँच पूरी कर रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत करें
Exercise of Powers	अधिकारों का प्रयोग
Explanation from the defaulter may be obtained	चूककर्ता से स्पष्टीकरण मांगा जाए
Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए
Expedite action	शीघ्र कार्रवाई करें
False information	गलत सूचना
For administrative convenience	प्रशासनिक सुविधा हेतु
For approval	अनुमोदनार्थ
For favourable action	अनुकूल कार्रवाई के लिए
For onward transmission	आगे भेजने के लिए
For perusal	अवलोकनार्थ
For reconsideration	कृपया पुनः विचार करें/पुनर्विचार हेतु
For signature	हस्ताक्षरार्थ
For sympathetic consideration	सहानुभूतिपूर्वक विचार करने के लिए
For the time being	फिलहाल
Forwarded and recommended	अग्रेषित और संस्तुत
Give details	विवरण प्रस्तुत करें
Give effect	लागू करें

Give interim reply	अंतरिम उत्तर भेज दें
Give particulars	कृपया विवरण दें
Has no comments to make	कोई टिप्पणी नहीं करनी है
Hightly objectionable	अत्यंत आपत्तिजनक
His request be acceded to	उसका अनुरोध स्वीकार किया जाए
Hold in abeyance	रोक रखें
I agree	मैं सहमत हूँ
Immediate action should be taken	तत्काल कार्रवाई की जाए
Immediate disposal of the case is requested	कृपया मामला तत्काल निपटाएं
Implement the decision	निर्णय कार्यान्वित करें
In absence of information	सूचना के अभाव में
Inadmissible	अस्वीकार्य
In anticipation of your approval	आपके अनुमोदन की प्रत्याशा में
Incomplete work	अधूरा कार्य
Inconvenience regretted	असुविधा के लिए खेद है
In consultation with	से परामर्श करके
Instructions are solicited	अनुदेश देने की कृपा करें
In supersession of our earlier instructions	अपने पूर्ववर्ती अनुदेशों का अधिक्रमण करते हुए
Inter alia	अन्य बातों के साथ-साथ
In the prescribed manner	निर्धारित ढंग से
Irrespective of the fact	इस बात का विचार किए बिना
I shall be obliged	मैं आभारी रहूँगा/होऊँगा
Issue Circular	परिपत्र जारी करें
Issue Instructions	अनुदेश दे दें
Issue Order	आदेश जारी करें



यूको गृह ऋण: शीर्ष पाँच शाखाएँ

क्र.सं.	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	संस्वीकृत राशि (लाख रुपये में)
1	चोपासनी हाउसिंग बोर्ड	3223	696
2	मिड कॉर्पोरेट सरदारपुरा	0569	526.72
3	सांचोर	2814	381.63
4	ओसियां	3170	379.48
5	भाटी सर्कल	2244	373.07

यूको कार ऋण: शीर्ष पाँच शाखाएँ

क्र.सं.	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	संस्वीकृत राशि (लाख रुपये में)
1	नेहरू पार्क, जोधपुर	1762	524.75
2	मंडोर	0563	248.35
3	बीकानेर मुख्य	0116	248.1
4	सालावास	1301	234.6
5	बाड़मेर	2422	227.4

यूको कृषि ऋण: शीर्ष पाँच शाखाएँ

क्र.सं.	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	संस्वीकृत राशि (लाख रुपये में)
1	पावटा बी रोड- जोधपुर	1558	2199
2	फलौदी	0882	667
3	नेहरू पार्क - जोधपुर	1762	627
4	कुडी भक्तासनी	2722	619
5	ओसियां	3170	438

**यूको एमएसएमई ऋण: शीर्ष पाँच शाखाएँ**

क्र.सं.	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	संस्वीकृत राशि (लाख रुपये में)
1	नेहरू पार्क- जोधपुर	1762	2289
2	मथानिया	1357	1150
3	पावटा बी रोड-जोधपुर	1558	888
4	बीजेएसआर जैन कॉलेज	1866	637
5	जालोर	2788	277

**वसूली करने वाली शीर्ष पाँच शाखाएँ**

क्र.सं.	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	वसूली (लाख रुपये में)
1	पावटा बी रोड-जोधपुर	1558	426.53
2	बोरानाडा	1200	261.45
3	देचू	1196	167.44
4	एमआईए बासनी	1094	162.87
5	नेहरू पार्क - जोधपुर	1762	69.75

**मोबाइल बैंकिंग जारी करने वाली शीर्ष पाँच शाखाएँ**

क्र.सं.	शाखा का नाम	शाखा क्रमांक	कुल मोबाइल बैंकिंग
1	लोहावट	0450	1109
2	बावड़ी	0538	1035
3	बाप	0881	761
4	बालेसर सत्ता	1088	745
5	आसोप	0464	725



## नराकास के तत्वावधान में आयोजित प्रतियोगिता



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), जोधपुर के तत्वावधान में यूको बैंक, अंचल कार्यालय जोधपुर द्वारा दिनांक 29.08.2025 को सचित्र लोकोक्ति एवं मुहावरा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें नराकास के सभी सदस्यों ने प्रतिभागिता की।



## बैंक उत्पादों के प्रचार-प्रसार में हिन्दी भाषा का महत्व

बैंक शब्द का अर्थ है , वह वित्तीय संस्था जो धनराशि का कारोबार करती है । वर्तमान बैंकिंग क्षेत्र का स्तर काफी वृद्ध हो गया है। प्रत्येक कारोबार में भाषा का महत्व सबसे अधिक होता है। भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे सामने वाला आसानी से समझ सकें। हिंदी भाषा वर्तमान समय में सबसे अधिक बोलचाल एवं सरल सुगम भाषा है। भाषा कारोबार की मुख्य स्रोत एवं माध्यम है। आज विश्व समुदाय के कई देश भारत को अपना बाजार मानकर अपने कर्मचारियों को हिंदी की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। बैंको का ग्राहक वर्ग मुख्य रूप से हिंदी भाषी है। अतः ऐसी उम्मीद की जाती है कि बैंकों में कारोबार की शत-प्रतिशत भाषा हिंदी ही बनें।



भाषा का मुख्य उद्देश्य विचारों का आदान प्रदान करना है ।

भाषा केवल संप्रेषण ही नहीं करती बल्कि चरित्र का भी उद्घाटन करती है । इसी कारण यह काम सबसे अच्छे रूप में अपनी मातृभाषा के द्वारा ही संभव हो सकता है । हमारे प्राचीन साहित्य में कहा गया है कि

“मातृभाषा परित्यज्य यो अन्य भाषामुपासते ‘

तत्र यांति हि ते देशः यत्र सूर्यो न भास्ते”

अर्थात् जो अपनी मातृभाषा को छोड़कर अन्य भाषा की उपासना करता है, वह देश अंधकारमय हो जाता है। बैंकिंग जैसे सेवा क्षेत्र में इस जन-जन की भाषा की उपयोगिता हमेशा रही है।

बैंकों के अखिल भारतीय स्वरूप एवं देश के सर्वाधिक पिछड़े और वंचित तबके को बैंकिंग सुविधाएं एवं वित्तीय सहायता प्रदान कर उन्हें आर्थिक विकास के प्रगति चक्र से जोड़ने का संकल्प भला हिंदी के बगैर कैसे हो सकता है।

बैंकिंग सेवा वर्तमान में गांव-गांव व दूर दराज के क्षेत्र की जनता तक पहुंच गई है। उनकी समझने एवं



बोलने वाली भाषा स्थानीय भाषा हिंदी ही होती है। अतः हिंदी भाषा आज बैंकों के लिए कारोबार की मुख्य आवश्यकता बन गई है।

हिंदी से प्रभावित होने वाले बैंकिंग क्षेत्र में सर्वप्रथम परामर्श बैंकिंग है , वास्तव में प्रथम बार बैंक शाखा में एक उत्सुक ग्राहक के रूप में ही आता है। अतः उसकी उत्सुकता एवं जिज्ञासा और अपेक्षाओं को आसानी से पूर्ण करने का माध्यम हिंदी भाषा ही हो सकती है। जिस सरल तरीके से हम ग्राहक को हिंदी भाषा में अपने उत्पाद को वर्णित कर सकते हैं , अन्य किसी भाषा से नहीं कर सकते हैं। अतः अब जरूरत इस बात की है कि हमें अंग्रेजी चोला उतारकर हिंदी भाषा को व्यवसाय बढ़ाने हेतु अपना सशक्त माध्यम अपनाना चाहिए।

“ राजभाषा का प्रकाश – बैंक का विकास  
अपनी भाषाओं को बनाएं- कारोबार की भाषा”

\*\*\*\*\*



## बैंक में राजभाषा नीति का अनुपालन Compliance With Official Language Policy In The Bank

### बैंक में पत्राचार :-

- ♦ बैंक की किसी शाखा/कार्यालय और किसी दूसरी शाखा/कार्यालय के बीच पत्राचार हिंदी या अंग्रेजी में हो सकता है।  
[नियम 4 (क)]
- ♦ बैंक की किसी कार्यालय और शाखा और क्षेत्र 'क' में स्थित शाखाओं/कार्यालयों के बीच पत्र आदि हिंदी में उस अनुपात से भेजे जाने हैं जो राजभाषा विभाग प्रत्येक वर्ष वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित करता है।  
[नियम 4 (ख)]
- ♦ क्षेत्र 'ख' और क्षेत्र 'ग' में स्थित कार्यालयों/शाखाओं का आपस में और क्षेत्र 'क' में स्थित कार्यालयों/शाखाओं के साथ, पत्र व्यवहार हिंदी या अंग्रेजी में हो सकता है। यह पत्र व्यवहार किस अनुपात में हिंदी में किया जाए, यह राजभाषा विभाग द्वारा हर वर्ष जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित किया जाता है।  
[नियम 4 (घ) व (ङ)]
- ♦ क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' में स्थित कार्यालयों/शाखाओं को संबोधित पत्र आदि का अंग्रेजी अनुवाद भेजने की आवश्यकता नहीं है।  
[नियम 4 का परंतुक (1)]

### हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर :-

- ♦ हिंदी में प्राप्त पत्र आदि के उत्तर चाहे वे किसी भी क्षेत्र से प्राप्त हों और किसी भी राज्य सरकार, व्यक्ति या केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से प्राप्त हों, शाखाओं/कार्यालयों द्वारा हिंदी में ही दिये जाए।  
[नियम 5]

### कार्यालयों में टिप्पण आदि :-

- ♦ बैंक ऐसे कार्यालयों/शाखाओं को, जिनमें कार्य करने वाले कर्मचारियों में से 80 प्रतिशत ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है और राजभाषा नियम 10(4) के अधीन अधिसूचित किए जा चुके हैं, विनिर्दिष्ट कर सकता है कि उनमें ऐसे कर्मचारियों द्वारा जिन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, टिप्पण, प्रारूपण और ऐसे अन्य शासकीय प्रयोजनों के लिए, जो आदेश में विनिर्दिष्ट किए जाएं, केवल हिंदी का प्रयोग किया जाएगा।  
[नियम 8(4), 10(2), और 10(4)]

### रजिस्ट्रों के नाम एवं शीर्ष :-

- ♦ बैंक में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्ट्रों के प्ररूप और शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में हों।

### बैंक में प्रयुक्त रबड़ की मोहरें, पत्र शीर्ष, लिफाफे आदि :-

- ♦ बैंक में प्रयुक्त रबड़ की सभी मोहरें द्विभाषिक अर्थात हिंदी और अंग्रेजी में होनी चाहिए और सभी पत्र शीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लिखी जाएं व मुद्रित या उत्कीर्ण की जाए।

### बैंक में प्रयुक्त फार्म :-

- ♦ बैंक में प्रयुक्त सभी फार्म हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मुद्रित किए जाए।



## “राष्ट्रीय पदक विजेता: श्री राजेश परिहार”

### परिचय

- नाम: श्री राजेश परिहार
- भारतीय वायुसेना के पूर्व सैनिक
- योगासन खेल के राष्ट्रीय खिलाड़ी
- योग एवं विज्ञान ऑफ लिविंग में एम.ए.

### उपलब्धियाँ

- राष्ट्रीय योगासन खेल चैम्पियनशिप में राजस्थान राज्य का छह बार प्रतिनिधित्व किया।
- राष्ट्रीय योगासन चैम्पियनशिप 2025 में दो कांस्य पदक जीते।
- राष्ट्रीय योगासन चैम्पियनशिप में भाग लेने वाले एकमात्र बैंकर होने का गौरव।
- योगा फेडरेशन ऑफ इंडिया के प्रमाणित राष्ट्रीय योगासन खेल रेफरी।
- बेटी भी योगासन खेल की अनुभवी राष्ट्रीय खिलाड़ी है।

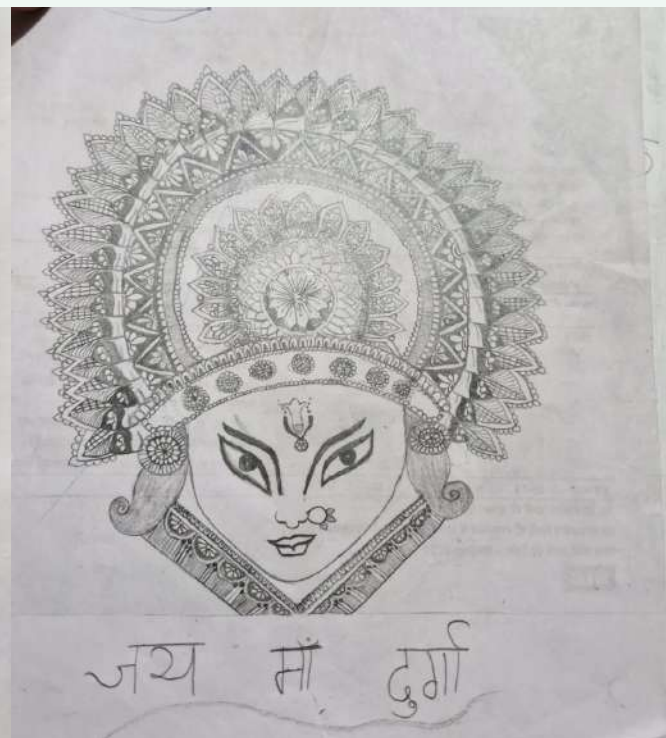




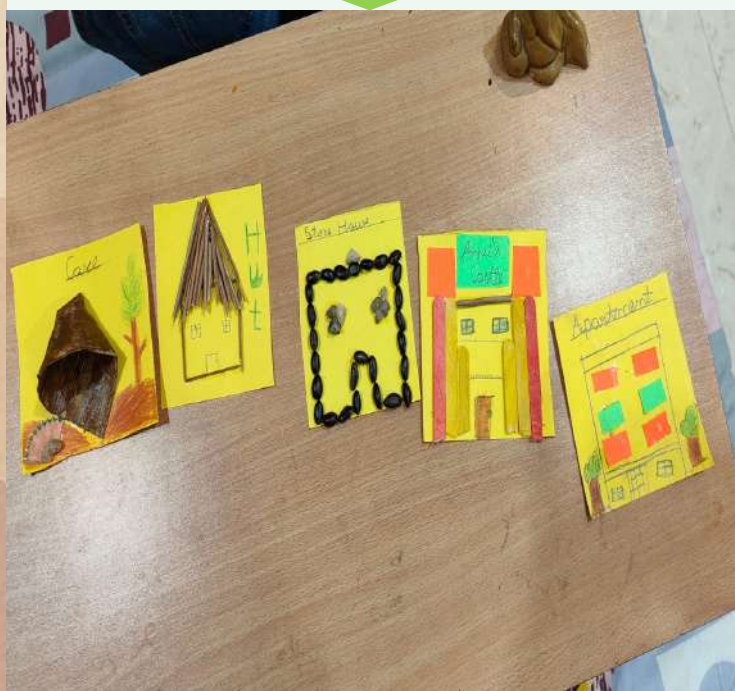
# बाल-वीथिका



अन्वी बराला सुपुत्री श्रीमती अन्नू  
गोदारा, अंचल कार्यालय, जोधपुर



आइशिका अरोड़ा सुपुत्री श्री सुनील  
अरोड़ा, अंचल कार्यालय, जोधपुर





## सरसों का साग



सरस्वती कुमारी  
प्रबंधक (राजभाषा)

ठंड के मौसम में सरसों के साग की खुशबू ही उत्तर भारत में सर्दियों की शुरुआत का अहसास करा देती है। इस मौसम में सरसों का साग बेहद पसंद किया जाता है, क्योंकि यह शरीर को गर्म रखता है और स्वाद में भी लाजवाब होता है। मक्खन या देसी घी के साथ खाए गए साग का स्वाद और भी बढ़ जाता है।

### सरसों के साग को बनाने की सामग्री

- 500 ग्राम सरसों के पत्ते
- 250 ग्राम पालक
- 100 ग्राम बथुआ
- 2 मध्यम आकार के टमाटर
- 2-3 हरी मिर्च
- 2 इंच लंबा अदरक का टुकड़ा
- 4-5 लहसुन की कलियाँ
- 2 चम्मच मक्के का आटा
- एक चौथाई छोटी चम्मच हल्दी
- सरसों का तेल - 2 टेबल स्पून
- हींग - 2-3 पिंच
- 1 चम्मच लाल मिर्च
- आधा छोटी चम्मच जीरा
- स्वादानुसार नमक



### बनाने की विधि

सरसों, पालक और बथुआ के पत्तों को साफ करके अच्छी तरह दो बार साफ पानी से धोकर छलनी में रखें, या थाली में रख कर उसको तिरछी रख दें, ताकि उसमें से पानी निकल जाय। पत्तों को मोटा मोटा काट कर कुकर में डालें, एक कप पानी डाल कर उबालने रख दें। कुकर की एक सीटी आने के बाद गैस बन्द कर दें और प्रेसर खतम होने दें। टमाटर, हरी मिर्च और अदरक को मिक्सी से बारीक पीस लें।

कढ़ाई में तेल डाल कर गरम करें। 2 चम्मच तेल डालकर मक्के के आटा हल्का ब्राउन होने तक भून कर प्याली में निकाल लीजिये।

बचा हुआ तेल कढ़ाई में डाल कर गरम करें, गरम तेल में हींग और जीरा डाल दें। हींग और जीरा भुनने के बाद एक प्याज और 4-5 लहसुन की कली को बारीक काट कर प्याज के हल्का गुलाबी होने तक भून लीजिये उसके बाद में हल्दी पाउडर, टमाटर का पेस्ट और लाल मिर्च डाल कर, मसाले को तब तक भूने कि मसाला तेल छोड़ने लगे।

कुकर से सरसों के पत्ते निकालें, ठंडा करें, और मिक्सी में दरदरा पीस लें। अब भुने हुये मसाले में, पिसे हुए सरसों के पत्ते, आवश्यकतानुसार पानी, भुना हुआ मक्के का आटा और नमक डाल अच्छे से मिला दें। सब्जी में उबाल आने के बाद 5-6 मिनट तक धीमी आग पर पकने दें। आपकी सरसों की भाजी तैयार है।

सरसों के साग में घी डालकर गरमा गरम मक्के की रोटी, नान, परांठा और चपाती के साथ परोसिये और खाइये।

सुझाव: सरसों के साग को बनाने के लिये, पारम्परिक तरीके में मक्के के आटे को भूनने के बजाय कच्चा ही घोल कर उस समय मिलाया जाता है जिस समय पत्ते अच्छी तरह उबल कर तैयार हो जाते हैं, और सब्जी को उबाल आने के बाद 20 - 25 मिनट तक पकाते है और थोड़ी थोड़ी देर में सब्जी को चलाते रहते हैं, मोटे भारी चमचे से सब्जी को घोंटते हैं, जब सब्जी अच्छी तरह घुट कर बन कर तैयार हो जाती है तब उसमें तड़का बनाकर डाल दिया जाता है। सब्जी बहुत अच्छी बन कर तैयार होती है।

### सरसों के साग के फायदे

- सर्दियों में शरीर को गर्म रखता है।
  - सरसों के पत्ते आयरन, कैल्शियम और विटामिन-A एवं C से भरपूर होते हैं।
  - पाचन शक्ति को मजबूत करता है।
  - त्वचा और बालों के लिए अत्यंत उपयोगी।
- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और सर्दी-जुकाम में राहत देता है।



राहुल पंवार  
वरिष्ठ प्रबंधक

## चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर वाणी

भारत की विविधताओं की जब भी बात की जाती है तो उसमें सिर्फ रहन सहन, खानपान या वेशभूषा ही शामिल नहीं होती बल्कि उसमें भाषा भी अहम योगदान देती है।

भारत को पूरे विश्व में उसकी सांस्कृतिक और भौगोलिक परिस्थितियों में अलग पहचान दिलाने का श्रेय सिर्फ भाषा को जाता है। जम्मू कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, गुजरात से लेकर नागालैंड तक भाषाओं में इतनी विविधताएं हैं कि जिसका कोई हिसाब नहीं। कश्मीर की भाषाओं में जहां मधुरता है तो पंजाब में सुरीलापन, हरयाणवी में रौब है तो राजस्थानी में वीरता।

राजस्थान के पश्चिम से शुरू हुई मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ौती, बागड़ी जैसी कुल 190 से ज्यादा क्षेत्रीय भाषाओं को मिलाकर राजस्थान का परिचय देती है। वैसे ही हर प्रान्त की भाषाओं की विविधता मिलकर भारत का परिचय देती है। पर इन विविधताओं की विशेषता है कि भाषा भले बदले पर कहने का भावार्थ नहीं बदलता।

कहते हैं कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है और जो समय के साथ बदलता नहीं है वह आगे नहीं बढ़ सकता। भारत के परिप्रेक्ष्य में यह बाद पूरी तरह सटीक बैठती है। बैंकिंग परिप्रेक्ष्य में यदि व्यक्ति के कार्यस्थल का परिवर्तन अटल है तो उसका उस जगह की भाषा के साथ जुड़ना अति आवश्यक हो जाता है। आप किसी भी कार्यालय में या व्यवसाय में काम करने वाले व्यक्तियों की भाषा में विविधता देख पाएंगे पर उनके काम करने का तरीका एक ही होगा जो उनके कार्य लक्ष्य से जुड़ा होगा। भाषा सिर्फ कहने तक सीमित नहीं है बल्कि भाषा दूसरे व्यक्ति के साथ आत्मीयता और भावनात्मक रूप से जुड़ने का भी कार्य करती है।

एक कहावत है कि "भारत वो जगह है जहाँ मिट्टी बदलती है पर अपनापन नहीं और जहाँ वाणी बदलती है पर भाव नहीं।" भाषा के बदलने के साथ विचार और अनुभव भी विकसित होने लगते हैं। भाषायी विविधता, भारत की भौगोलिक संस्कृति में चार चाँद लगाती है।



### घोटाले की कार्यप्रणाली

- उपयोगकर्ताओं को अज्ञात नंबरों से व्हाट्सएप छवियां प्राप्त होती हैं।
- जालसाज फोन कॉल के माध्यम से पीड़ित से चित्र में दिखाए गए व्यक्ति की पहचान करने के लिए कह सकता है।
- छवि फ़ाइलों को लिस्ट सिग्निफिकेंट बिट (एलएसबी) स्टेनोग्राफी जैसी तकनीकों का उपयोग करके मालवेयर के साथ अंतर्निहित किया जाता है।
- जैसे ही छवि डाउनलोड या खोली जाती है, मालवेयर सक्रिय हो जाता है और बैंकिंग क्रेडेंशियल, ओटीपी पिन, यूपीआई डेटा, इंस्टॉल किए गए ऐप्स और संपर्क आदि जैसी संवेदनशील/वित्तीय/व्यक्तिगत जानकारी तक पहुंचकर डिवाइस का पूर्ण नियंत्रण ले लेता है।

### ऐसे घोटाले से बचने के सर्वोत्तम तरीके

- अज्ञात नंबरों से चित्र या वीडियो डाउनलोड न करें।
- यदि छवि या वीडियो का आकार असामान्य रूप से बड़ा लगता है, तो उसे डाउनलोड करने से बचें, क्योंकि उसमें हानिकारक एप्लिकेशन के लिंक हो सकते हैं।
- किसी फोटो में किसी व्यक्ति की पहचान करने में मदद मांगने वाले संदेशों का जवाब न दें - यह संभवतः प्रलौभन हो सकता है।
- व्हाट्सएप सेटिंग में मीडिया के लिए ऑटो-डाउनलोड बंद करें।
- संदिग्ध संचार (कॉल, एसएमएस, व्हाट्सएप) की रिपोर्ट चक्षु (CHAKSHU) पोर्टल [sancharsaathi.gov.in](http://sancharsaathi.gov.in) पर करें।
- साइबर थोखाधड़ी की घटनाओं की रिपोर्ट [cybercrime.gov.in](http://cybercrime.gov.in) पर करें या सहायता के लिए 1930 पर कॉल करें।



सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust





अनू गोदारा  
सहायक प्रबंधक

## वर्तमान समय में कामकाजी महिलाओं की दोहरी भूमिका

वर्तमान समय में कामकाजी महिलाओं की भूमिका समाज में बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। पहले महिलाओं की भूमिका घर और परिवार तक ही सीमित थी, लेकिन अब महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं। वे न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो रही हैं, बल्कि वे समाज में भी अपनी पहचान बना रही हैं। भारतीय समाज की परंपरागत व्यवस्था में महिलाओं की पारिवारिक भूमिकाओं में सामाजिक, सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर उनसे यही उपेक्षा की जाती है कि वे इन भूमिकाओं के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होकर कार्य करें क्योंकि परंपरागत समाज पुरुष प्रधान रहा है, अतः महिलाओं से उपेक्षा की जाती है कि वे पुरुष वर्ग के स्वामित्व को स्वीकार करते हुए पारिवारिक सेवाओं को ही अपना परम कर्तव्य समझें। परंतु औद्योगिकरण, नगरीकरण व आधुनिक भौतिकवादी विचारधारा के बाद शिक्षा व रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी के फलस्वरूप महिलाएं भी घर की चारदीवारी से बाहर निकाल कर व्यावसायिक क्षेत्र में कार्य करने लगी हैं जिससे इनकी परिस्थिति व भूमिका में व्यापक बदलाव आया है।

### प्रस्तावना :-

एक कामकाजी महिला की अनेक भूमिकाएँ होती हैं वह एक पत्नी, माँ, बहू, व दफ्तर में एक कार्यकर्ता की भूमिका निभाती है और उसे इन सब भूमिकाओं के अतिरिक्त स्वयं का भी ध्यान रखना होता है वह इन सब भूमिकाओं में किस प्रकार तालमेल बैठाती है। इस लेख के माध्यम यह जानने का प्रयास है कि एक कामकाजी महिला किस प्रकार से अपनी भूमिकाओं में सामंजस्य रखती है, वह किस प्रकार से घर व बाहर की दोहरी भूमिका निभाती है, वह एक कामकाजी होने पर भी पारिवारिक सामंजस्य रखती है, वह वैवाहिक सामंजस्य किस प्रकार रखती है तथा वह कामकाजी होने पर अपने बच्चों को पर्याप्त समय दे पाती है, क्या वह अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को ईमानदारी से निभाती है ?

### कामकाजी महिलाओं की भूमिका का सामंजस्य संबंधी आधार :-

काम और परिवार का संतुलन :- कामकाजी महिलाओं को अपने काम और परिवार के बीच संतुलन बनाना होता है। उन्हें अपने काम को पूरा करने के साथ-साथ अपने परिवार की जरूरतों का भी ध्यान रखना होता है। पारिवारिक सामंजस्य को भी प्रभावित करता है। यदि परिवार में संतुलित सामंजस्य है तो कार्यालय में अनेक समस्याएँ उत्पन्न होने पर भी उनका निराकरण सरलता से ढूँढा जा सकता है।

इसी प्रकार व्यावसायिक सामंजस्य होने पर ये कामकाजी महिलाएँ बदलती हुई परिस्थितियों के अनुकूल अपने व्यवहार को परिवर्तित कर लेती हैं लेकिन यह आवश्यक नहीं जिन कार्यरत महिलाओं का अपने कार्यालय में अच्छा सामंजस्य है उनका परिवार में भी अच्छा सामंजस्य होगा। यद्यपि परिवार का सामंजस्य कार्यालय के कार्य एवं सम्बन्धों को भी प्रभावित करता है। इसी प्रकार कार्यालय में अधिक कार्यभार होने पर, देर से घर पहुँचना, परिवार के सदस्यों कि उचित समय पर माँगों की पूर्ति न कर पाना परिवार में असामंजस्य का कारण बन सकती है एवं महिलाओं के मन में मानसिक तनाव, संघर्ष, द्वन्द्व आदि उत्पन्न हो सकते हैं। अतः पारिवारिक एवं व्यावसायिक सामंजस्य जहाँ परिवार की आर्थिक, सामाजिक पृष्ठभूमि पर निर्भर करता है, वहीं कार्यस्थल की परिस्थितियाँ विरोधी एवं सहयोगी पर निर्भर करती हैं।

### पारिवारिक एवं वैवाहिक सामंजस्य :-

एक कामकाजी महिला होने पर उन्हें दोहरी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है। वह घर एवं बाहर की दोहरी भूमिका में सामंजस्य के लिए इनसे संबन्धित कर्तव्य और जिम्मेदारियों को पूरा करने में ईमानदारी से उनका पालन करती है। एक



कामकाजी महिला अपने पत्नी और माँ की भूमिका को अधिक महत्त्व देती है। घर की जिम्मेदारियों के साथ-साथ वह अपनी नौकरी संबंधी जिम्मेदारियों को समझती है और उसका पालन भी वह पूरी ईमानदारी के साथ करने की कोशिश करती है। इन जिम्मेदारियों को निभाते-निभाते वह कहीं ना कहीं वह अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पाती हैं। दोहरी भूमिका के सफल निर्वाह के लिए आवश्यक है कि उन्हें इन सब में परिवार का सहयोग प्राप्त हो परिवार के सभी सदस्य उसकी इन भूमिकाओं को

निभाने में सहयोग करे तो वह अपने स्वास्थ्य पर भी ध्यान दे सकती है।

अगर वह स्वयं स्वस्थ रहेगी तो स्वस्थ परिवार का निर्माण करेगी इन सब में यदि कार्यालय में या जहाँ भी वह काम कर रही है वहाँ पर उनके लिए उचित वातावरण की व्यवस्था की जाए तो उन्हें स्वास्थ्य संबंधी परेशानी से बचाया जा सकता है। पारिवारिक सामंजस्य व नौकरी इस दोहरी भूमिका को निभाने के लिए न केवल दक्षता चाहिए अपितु इन मिली जुली भूमिका से उत्पन्न परिवर्तनों को मानसिक एवं शारीरिक स्वीकृति भी देनी होगी और इनमे तालमेल भी बैठाना होगा।



पारिवारिक सामंजस्य के लिए आवश्यक कि परिवार के सदस्य पूरा सहयोग करें, आर्थिक परिस्थितियाँ अच्छी हों, बच्चों को पर्याप्त समय दिया जाए, वह परिवार के अन्य कर्तव्यों को भी पूरा करे तभी दोहरी भूमिका अच्छी तरह निभाई जा सकती है।

### रूढ़िवादी मनोवृत्ति :-

एक अध्ययन के माध्यम से यह जानने कि कोशिश की गई कि ये उच्च शिक्षित महिला प्रवक्तार्यें जिन पुरुष प्राचार्यों, सहकर्मियों और कर्मचारियों के साथ काम करती हैं उनकी मनोवृत्ति कैसी है? उनमें से कुछ लोग उत्साहित थे, कुछ तटस्थ थे और कुछ लोग ऐसे भी थे जो रूढ़िवादी सोच रखते हैं उनका मानना था कि महिलाएं व्यवसाय में आकर पुरुष वर्ग में बेरोजगारी फैलाने के लिए उत्तरदायी हैं। महिलाएं केवल मात्र पेंशन एवं अवकाश का समय बिताने के लिए नौकरी करती हैं। ये महिलाएं न तो घर और न ही कार्यालय में निष्ठापूर्वक कार्य करती हैं। इस प्रकार की मनोवृत्ति इसका स्पष्ट कारण यह जान पड़ता है कि व्यवसायिक क्षेत्र में अधिक प्रगति प्राप्त करना उनके कुछ पुरुष सहकर्मियों को सहन नहीं हो पता है।

दुर्गा किदाओं ने ठीक ही कहा लगता है कि नौकरी करने वाली स्त्रियों की निंदा इसलिए की जाती है क्योंकि वे सामान्य स्त्रियों की तरह पुरुष की हर बात को वेद वाक्य मानने को तैयार नहीं हैं। इससे पुरुषों की अहम् भावना को मात्र ठेस ही नहीं लगती है बल्कि उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि उनका अस्तित्व ही खतरे में है। फलस्वरूप अपनी बौद्धिक एवं शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन करने के बजाय वे स्त्रियों की निंदा करने लगते हैं। इसी प्रकार यदि महिला अधिकारी हुई और पुरुष अधीनस्थ कर्मचारी हुए और यह अपने कर्मचारियों से अनुशासन बरतने के लिए एवं निष्ठापूर्वक काम करने के लिए कहे तो उसे कोपभाजन बनना पड़ेगा, दूसरी और यदि वह नम्रता और शिष्टता से काम लेती है तो कहा जाता है कि पुरुषों में अधिक रुचि लेती है। इससे पता चलता है पुरुष अभी भी महिला कर्मचारी के अधीन काम करना पसन्द नहीं करते क्योंकि इससे उनकी अहम् भावना को ठेस लगती है। सरकार और समाज को भी कामकाजी महिलाओं के लिए सहायक वातावरण बनाने के लिए काम करना चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:-

### महिला सशक्तिकरण :-

सरकार और समाज को महिला सशक्तिकरण के लिए काम करना चाहिए। महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान करने से उन्हें आत्मविश्वास और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

**सुरक्षा परामर्शिका**

कार्ड को अनधिकृत या कपटपूर्ण गतिविधियों से बचाएं

आजकल, अंतरराष्ट्रीय लेनदेन को तक्षित करने वाले डेबिट कार्ड धोखाधड़ी में बूझि हुई है। अपनी मेहनत की कमाई को सुरक्षित रखने के लिए, जरूरत न होने पर अंतरराष्ट्रीय लेनदेन को 'अक्षम' करने की हम हदता से अनुप्रासा करते हैं।

**कार्ड उपयोग नियंत्रण को प्रबंधित करें:**

यूको एमबैंकिंग प्लस ऐप में उपलब्ध यूको डिजीसेफ़ या यूको सिक्थोर ऐप के माध्यम से

**सुरक्षित रहने के लिए सर्वोत्तम अभ्यास**

- अंतरराष्ट्रीय लेनदेन अक्षम करें: आवश्यकता न होने पर अपने कार्ड के अंतरराष्ट्रीय लेनदेन मोड को अक्षम रखें।
- केवल आवश्यकता होने पर ही सक्षम करें: यदि अंतरराष्ट्रीय लेनदेन के उपयोग की आवश्यकता है, तो इसे सक्षम करें और इसके उपयोग के तुरंत बाद अक्षम करें।
- यूको डिजीसेफ़ तथा यूको सिक्थोर ऐप की अन्य सुरक्षा सुविधाओं का उपयोग करें:
  - उपयोग में न होने पर डिजिटल बैंकिंग चैनल अक्षम करें।
  - अपनी आवश्यकता के अनुसार लेन-देन की सीमा निर्धारित करें।
- कभी भी व्यक्तिगत, संवेदनशील या वित्तीय जानकारी जैसे कार्ड नंबर, सीवीवी, पिन, ओटीपी, पासवर्ड, यूपीआई पिन, आधार नंबर आदि किसी के साथ साझा न करें।
- धोखाधड़ी वाले कॉल, एसएमएस या व्हाट्सएप की रिपोर्ट **चक्षु पोर्टल (sancharsaathi.gov.in)** पर करें।
- हेल्पलाइन नंबर **1930** डायल करके साइबर धोखाधड़ी की घटनाओं की रिपोर्ट करें और साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल **cybercrime.gov.in** पर शिकायत दर्ज करें।

## लैंगिक समानता :-

सरकार और समाज को लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। महिलाओं को समान अवसर और समान वेतन प्रदान करने से उन्हें अपने अधिकारों का उपयोग करने में मदद मिल सकती है। पारिवारिक सामंजस्य एवं नौकरी के लक्ष्यों की एकसाथ समीक्षा का कोई अर्थ यद्यपि सभी शिक्षित महिलाओं के लिए न भी हो, तो भी बहुतों के लिए इसका अर्थ संघर्ष हो सकता है। दोनों लक्ष्यों की पूर्ति करने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

## कार्यस्थल पर सुरक्षा :-

सरकार और समाज को कार्यस्थल पर सुरक्षा के लिए काम करना चाहिए। महिलाओं को कार्यस्थल पर उत्पीड़न से बचाने के लिए कड़े नियम और कानून बनाने से उन्हें अपने अधिकारों की रक्षा करने में मदद मिल सकती है।

## निष्कर्ष

कामकाजी महिलाएं समाज में अपनी भूमिका निभा रही हैं और सफलता प्राप्त कर रही हैं। सरकार और समाज को भी कामकाजी महिलाओं के लिए सहायक वातावरण बनाने के लिए काम करना चाहिए। महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और समान अवसर प्रदान करने से उन्हें आत्मविश्वास और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

\*\*\*\*\*



## सुरक्षा परामर्शिका



# पार्सल में मुफ्त गैजेट्स से सावधान रहें !!

आजकल, जालसाज विश्वसनीय अधिकारियों के रूप में, पूर्व-कॉन्फिगर हुए दुर्भावनापूर्ण ऐप्स युक्त "मुफ्त स्मार्टफोन" भेजकर व्यक्तियों को धोखा देते हैं।



## धोखाधड़ी की कार्यप्रणाली



जालसाज स्वयं को बैंक अधिकारी बताकर लोगों से कॉल, मैसेज या व्हाट्सएप के जरिए संपर्क करते हैं और मुफ्त उपहार की पेशकश करते हैं।



स्मार्टफोन या अन्य गैजेट जैसे आईओटी डिवाइस मुफ्त उपहार के रूप में भेजे जाते हैं।



इन डिवाइसों में ओटीपी, एसएमएस और संवेदनशील जानकारी चुराने हेतु दुर्भावनापूर्ण ऐप्स पहले से लोड किए गए हैं।



जालसाज वित्तीय लेनदेन के दौरान पैसे निकालने के लिए चुराए गए क्रेडेंशियल्स का उपयोग करते हैं।

## सुरक्षित रहने के सर्वोत्तम अभ्यास

- ❗ **मुफ्त उपहार** या अप्रत्याशित लाभ की पेशकश करने वाले अप्रत्याशित कॉल, संदेशों, व्हाट्सएप का जवाब देने से बचें।
- ❗ अनचाहे पार्सल को सीधे संगठन से सत्यापित करें।
- ✅ आधिकारिक वेबसाइटों या ऐप्स से विवरण का उपयोग करके ग्राहक सेवा से संपर्क करें।
- ✅ नियमित रूप से ऐप अनुमतियों की समीक्षा करें और अनावश्यक अभिगमन से इनकार करें।
- ✅ धोखाधड़ी वाले कॉल, एसएमएस या व्हाट्सएप की रिपोर्ट **चक्षु पोर्टल** [sancharsaath.gov.in](https://sancharsaath.gov.in) पर करें।
- ✅ **हेल्पलाइन नंबर 1930** डायल करके साइबर धोखाधड़ी की घटनाओं की रिपोर्ट करें और साइबर क्राइम रिपोर्टिंग पोर्टल [cybercrime.gov.in](https://cybercrime.gov.in) पर शिकायत दर्ज करें।



**यूको बैंक**  
(भारत सरकार का उपक्रम)



**UCO BANK**  
(A Govt. of India Undertaking)



सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust



# हिंदी माह



अंचल कार्यालय, जोधपुर में दिनांक 14.09.2025 से 14.10.2025 तक हिंदी माह मनाया गया।

इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे कि ऑनलाइन राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता, कुछ भुला कुछ याद रहा प्रतियोगिता, चित्र देखो कहानी लिखो प्रतियोगिता, सचित्र लोकोक्ति एवं मुहावरा प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया।

दिनांक 15.10.2025 को अंचल प्रमुख श्री जितिन चौधरी ने हिंदी माह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

हिंदी दिवस  
की हार्दिक  
शुभकामनाएं

75  
आजादी का  
अमृत महोत्सव

यूको बैंक  
(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK  
(A Govt. of India Undertaking)

75  
आजादी का  
अमृत महोत्सव

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust



## विशेष उपलब्धि



### जोधपुर अंचल की शाखा बाप (0882) के शाखा प्रमुख श्री सतपाल जी के बच्चों का बॉक्सिंग में शानदार प्रदर्शन

सुश्री नविता पुत्री सतपाल, एस.डी. इंटरनेशनल स्कूल, पानीपत में कक्षा 8वीं की विद्यार्थी है। इस वर्ष सोनीपत (हरियाणा) में आयोजित अंडर 17 वर्ग सीबीएसई खेलों में बॉक्सिंग में 54-57 किलोग्राम में नविता ने रजत पदक जीता। हिसार (हरियाणा) में आयोजित हरियाणा सब-जूनियर खेल 2025 में नविता ने राज्य स्तर पर कांस्य पदक भी जीता। पिछले वर्ष 2024 में गुरुग्राम (हरियाणा) में आयोजित सीबीएसई खेलों में अंडर 14 वर्ग में नविता ने स्वर्ण पदक जीता था।

श्री सुधांशु पुत्र सतपाल, एस.डी. इंटरनेशनल स्कूल, पानीपत में कक्षा 10वीं का विद्यार्थी है। इस वर्ष सोनीपत(हरियाणा) में आयोजित अंडर 17 वर्ग सीबीएसई खेलों में बॉक्सिंग में 54-57 किलोग्राम में सुधांशु ने कांस्य पदक जीता। सुधांशु ने अंडर-17 या जूनियर राज्य स्तरीय हरियाणा बॉक्सिंग प्रतियोगिता 2025, रोहतक (हरियाणा) में रजत पदक भी जीता। पिछले वर्ष 2024 में उन्होंने उप-जूनियर हरियाणा बॉक्सिंग प्रतियोगिता, अंडर-14 वर्ग में हिसार (हरियाणा) में कांस्य पदक प्राप्त किया था।





## हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 60% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%

9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुलअनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13 (i)	मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(ii)	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(iii)	विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें		वर्ष में 2 बैठकें	
(क)	हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक),	
(ख)	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
(ग)	राजभाषा कार्यान्वयन समिति			
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	45%	35%	25%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।





कृष्ण कुमार  
सहायक प्रबंधक  
अंचल कार्यालय, जोधपुर

## आधुनिक ज़िंदगी पर व्यंग्य

कविता

अच्छी थी, पगडंडी अपनी,  
सड़कों पर तो, जाम बहुत है !!  
फुर्र हो गई फुर्सत, अब तो,  
सबके पास, काम बहुत है !!

नहीं ज़रूरत, बुढ़ों की अब,  
हर बच्चा, बुद्धिमान बहुत है !!  
उजड़ गए, सब बाग बगीचे,  
दो गमलों में, शान बहुत है !!

मठा, दही, नहीं खाते हैं,  
कहते हैं, जुकाम बहुत है !!  
पीते हैं, जब चाय, तब कहीं,  
कहते हैं, आराम बहुत है !!

बंद हो गई, चिट्ठी, पत्नी,  
व्हाट्सएप पर, पैगाम बहुत है !!  
झुके-झुके, स्कूली बच्चे,  
बस्तों में, सामान बहुत है !!

नहीं बचे, कोई सम्बन्धी,  
अकड़, ऐंठ, अहसान बहुत है !!  
सुविधाओं का, ढेर लगा है यार,  
पर इंसान, परेशान बहुत है !!

रिश्तों की अब, कदर कहाँ है,  
सब कहते हैं, "समय बहुत है" !!  
पर दिल से मिलने वाला कोई,  
ढूँढो तो, इंसान बहुत है !!

दिखावे में सब आगे निकले,  
अंदर से, वीरान बहुत है !!  
सोशल मीडिया पर हँसी बिखरी,  
पर आँखों में, तूफान बहुत है !!

माँ-बाप बैठे राह तके हैं,  
कहते हैं, "बच्चों का काम बहुत है" !!  
पर सच यह है, मोबाइल ने अब,  
छीन लिया, आराम बहुत है !!

पड़ोसी से अब कौन मिले,  
दीवारों में, मकान बहुत है !!  
दिल की बातें सुनने वाला,  
दुनिया में, विरले जान बहुत है !!

दोस्तों की भी, भीड़ बड़ी है,  
पर सच्चे, पहचान बहुत है !!  
सुख-दुख बाँट सके जो दिल से,  
ऐसे अब, नादान बहुत है !!

पैसों की है, दौड़ लगी सब,  
जीवन में, अरमान बहुत है !!  
सपनों का बोझ उठाए सब ही,  
पर पूरे, अधूरे गुमान बहुत है !!



सुमित बोहरा  
ग्राहक सेवा  
सहयोगी  
चोपासनी हाउसिंग  
बोर्ड शाखा,  
जोधपुर

भाषा ही सर्वश्रेष्ठ तत्व है जो मनुष्य में वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम है। किसी राष्ट्र के आभ्यन्तर के निर्माण, विकास, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान में भाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। हिन्दी भाषा, भारत की एकता और विविधता का प्रतीक है यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है। हिन्दी भाषा केवल भारत देश के लोगों के लिए ही नहीं अपितु भारत देश के बाहर निवास कर रहे भारतीयों को भी भारत की सांस्कृतिक विरासत से जोड़ती है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के पिता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने मातृभाषा प्रेम पर लिखा दोहा-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।  
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥  
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।  
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार ॥

**भावार्थ:-** अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान, सभी देशों से लेना चाहिए, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा में ही करना चाहिए।

समूचे विश्व में कोई भी व्यक्ति या किसी स्थान या संस्कृति से मिलाप भाषा द्वारा ही होता है अर्थात् वह व्यक्ति भाषा से सामंजस्य जोड़कर किसी अन्य स्थान पर निवास करता है तो भी उस भाषा रूपी माध्यम से वह हमेशा अपने देश के करीब रहता है और वह देश प्रेम की आभा से मुग्ध रहता है इसी प्रकार कोई भी भारतीय विश्व में कोई भाग में रह रहा हो। हिन्दी भाषा रूपी माध्यम से वह स्वयं देश-प्रेम से प्रफुल्लित रहता है। प्रवासी भारतीय शब्द उन व्यक्तियों के संदर्भ में प्रयुक्त होता है जो रोजगार, व्यापार या किसी अन्य प्रयोजन से भारत को छोड़कर विश्व के दूसरे भागों में निवास करते हैं। विदेश मंत्रालय, भारत सरकारी की वेबसाइट के अनुसार 05 अक्टूबर, 2023 तक प्रवासी भारतीयों की संख्या लगभग 3 करोड़ 23 लाख है। प्रवासी भारतीयों की संख्या सबसे अधिक संयुक्त राज्य अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब देशों में है।

प्रवासी भारतीयों को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है:-

- i) अनिवासी भारतीय
- ii) भारतीय मूल का व्यक्ति
- iii) ओवरसीज सीटीजन ऑफ इण्डिया



उपरोक्त वर्गीकृत श्रेणियाँ संविधान में लिखित नागरिकता अनुच्छेद (5 से 11) और नागरिकता कानून 1955 के अनुसार है।

i) अनिवासी भारतीय: 'अनिवासी भारतीय' (Non-Resident Indian NRI) का अर्थ ऐसे नागरिकों से है, जो भारत के बाहर रहते हैं और भारत के नागरिक है या जो नागरिकता अधिनियम, 1955 की धारा 7 (क) के दायरे में 'विदेशी भारतीय नागरिक' कार्डधारक है।

-- आयकर अधिनियम के अनुसार कोई भी नागरिक जो 'भारत के निवासी के रूप में मानदंडों को पूरा नहीं करता है, वह भारत का निवासी नहीं है और उसे आयकर देने के लिए अनिवासी भारतीय माना जाता है।

ii) भारतीय मूल का व्यक्ति:-

-- भारतीय मूल के व्यक्ति (Person of Indian Origin PIO) से तात्पर्य एक विदेशी नागरिक (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, चीन, भूटान, श्रीलंका और नेपाल को छोड़कर) से है, जो :-

क) किसी भी समय पासपोर्ट धारक हो या

ख) वह या उसके माता-पिता/पितामह, दोनों ही भारत में जन्मे हो या भारत शासन अधिनियम, 1935 के प्रभावी होने से पूर्व में भारत के स्थायी नागरिक हो या इस अवधि के बाद किसी क्षेत्र के भारत का अभिन्न अंग बनने से पूर्व वहाँ का निवासी हो।

iii) ओवरसीज सिटीजन ऑफ इण्डिया:-

क) प्रवासी भारतीयों की माँग को ध्यान में रखते हुए एक छद्म नागरिकता योजना बनाई गई जिसे 'विदेशी भारतीय नागरिकता' आमतौर पर ओसीआई कार्डधारक के रूप में जाना जाता है।

ख) प्रवासी भारतीयों को अनिवासी भारतीयों के समान सभी अधिकार (कृषि एवं बागान अधिग्रहण का अधिकार) दिए गए हैं। प्रवासी भारतीयों का प्रवासन केवल भौगोलिक सीमाओं तक ही सीमित नहीं है अपितु सांस्कृतिक धरोहर, प्रवासी निवेश, औद्योगिक विकास को त्वरित करने, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु 'परिवर्तन के वाहक' के रूप में कार्य करने से भी है।

वैश्विक पटल की बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में मुख्य कार्यकारी अधिकारी से लेकर अनेक राष्ट्रों के कानून और अर्थव्यवस्थाओं में निर्णय लेने वाली संस्थाओं में प्रमुख हिस्सा बनने और उनमें योगदान देने के लिए प्रवासी भारतीयों की भूमिका महत्वपूर्ण है। विश्व बैंक ने विश्व विकास रिपोर्ट 2023 प्रवासी, शरणार्थी और समाज प्रकाशित की। इस रिपोर्ट के अनुसार दूसरे देशों में काम करने वाले भारतीयों की आय में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई जो कि अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। भारत विदेशों से प्राप्त प्रेषण में प्रथम स्थान उन्होंने कहा था, "भारतीय भाषाएँ नदियाँ हैं और हिन्दी महानदी। यही हिन्दी महानदी अब महासागर के रूप में अनेक देशों और प्रान्तों में भारत की सांस्कृतिक धरोहर को सुशोभित कर रही है। प्रवासी भारतीयों के सामंजस्य और नेटवर्किंग में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान है।

भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय मातृभाषा हिन्दी को ही जाता है। हिन्दी आम आदमी के रूप में देश की एकता का सूत्र है और संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ इसका विशेष स्थान है। हिन्दी भाषा के महत्व को गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने बड़े सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया था।

हिन्दी भाषा के कारण ही प्रवासी भारतीयों के आंगन में नई ऊर्जा विद्यमान रहती है और वे लोग भारत के बाहर भी एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में, दक्षिण अफ्रिका में भारतीयों के खिलाफ संस्थागत भेदभाव को समाप्त करने के लिए महात्मा गाँधी का संघर्ष आधुनिक भारत में प्रवासी भारतीयों से स्वयं को जोड़ने के लिए एक प्रेरणादायक किंवदन्ती बन गया। महात्मा गाँधी 9 जनवरी, 1915 को दक्षिण अफ्रिका से लौटे थे इसलिए उसी दिवस की याद में 9 जनवरी को 'प्रवासी भारतीय दिवस' मनाया जाता है।

भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा मनाया जाने वाला यह दिवस विश्व में रह रहे सभी प्रवासी भारतीयों को भारत सरकार और देश के व्यक्तियों से जुड़ने का साझा मंच प्रदान करता है। अभी हाल ही में 17वां प्रवासी भारतीय सम्मेलन 2023 को मध्य प्रदेश के इन्दौर में मनाया गया था। जिसका विषय "प्रवासी अमृतकाल में भारत की प्रगति के विश्वसनीय भागीदार" था। प्रवासी भारतीय दिवस के इस सम्मेलन में 70 विभिन्न देशों के 3500 से अधिक प्रवासी सदस्यों ने पंजीकरण कराया है। भारत की स्वतंत्रता में हमारे प्रवासी स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को उजागर करने हेतु "आजादी आजादी का अमृत महोत्सव" - "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रवासी भारतीयों का योगदान" विषय पर पहली बार डिजिटल प्रवासी भारतीय दिवस प्रदर्शनी का भी उद्घाटन किया गया।

प्रवासी भारतीयों का भारत से जुड़े रहने में राजभाषा हिन्दी का स्थान उल्लेखनीय है प्रवासी भारतीयों के आंगन में हिन्दी भाषा की नई ऊर्जा से ओत-प्रोत करने हेतु विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। उनमें प्रमुख हैं- विश्व हिन्दी सम्मेलन और प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन होता है। इन कार्यक्रमों से भारतीय मूल्यों का समुच्च विश्व में विस्तार हो रहा है। विश्वभर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग हिन्दी को सम्पर्क भाषा के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं इससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को एक नई पहचान मिली है। यूनेस्को की सात भाषाओं में हिन्दी को भी मान्यता मिली है।

भारतीय विचार और संस्कृति का वाहक होने का श्रेय हिन्दी को ही जाता है। आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिन्दी की गूंज सुनाई देने लगी है। देश के प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिन्दी में ही अभिभाषण दिया गया। इससे राजभाषा हिन्दी की कीर्ति न केवल भारत में बल्कि सम्पूर्ण विश्व में फैली है। विश्व हिन्दी सचिवालय, विदेशों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने और संयुक्त राष्ट्र में हिन्दी को अधिकारिक भाषा बनाने के लिए कार्यरत है वर्तमान केन्द्र सरकार ने प्रवासी भारतीयों को जोड़ने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। सरकार का कोई भी प्रतिनिधि यदि किसी विदेश दौरे पर जाता है तो वह उस देश में रह रहे प्रवासी भारतीयों के बीच अवश्य जाते हैं। इससे प्रवासी भारतीयों के मन में न केवल अपनेपन का भाव प्रकट होता है बल्कि वे मातृभाषा के सहारे देश के अन्य लोगों से रूबरू भी होते हैं। भारतीय 'ब्रेन ड्रेन' को 'ब्रेन-गेन' में बदलने के लिए भारत सरकार विदेश में बेहतर आर्थिक अवसरों की तलाश में जाने वाले कामगारों के लिए 'अधिकतम सुविधा' और 'न्यूनतम असुविधा सुनिश्चित करना चाहती है। भारत को विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों से जुड़ाव का मुख्य साधन 'हिन्दी भाषा ही है।

वैश्विक जुड़ाव किसी देश की सार्वजनिक कूटनीति के प्रमुख पहलुओं में से एक है, प्रवासी भारतीय देश की सार्वजनिक कूटनीति और समग्र विदेश नीति अभिविन्यास का महत्वपूर्ण स्तम्भ है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी अपने बहुप्रशंसित और व्यापक रूप से भाग लेने वाले सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से सीधे संवाद करके प्रवासी भारतीयों के साथ जुड़ने में बहुत प्रभावी रहे हैं।

इन कार्यक्रमों में प्रवासी भारतीय बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। हिन्दी दिवस के अवसर पर राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक के सहयोग से तैयार किये गये लर्निंग इण्डियन लैंग्वेज विद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (लीला) के मोबाइल ऐप का लोकार्पण भी किया गया। इस ऐप से देशभर में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से जन सामान्य को हिन्दी सीखने में सुविधा और सरलता होगी।

प्रवासी भारतीयों से संबंधित पहल में भारत को जानो' कार्यक्रम चलाया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत (18-30 वर्ष) को भारतीय मूल और समकालीन भारत से परिचित कराता है इसके अतिरिक्त वज (VAJRA) योजना (उन्नत संयुक्त अनुसंधान का दौरा), ये एक रोटेशन कार्यक्रम को औपचारिक रूप देता है जिसमें शीर्ष एन.आर.आई. वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, प्रबंधक और पेशेवर एक संक्षिप्त अवधि के लिए भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के संगठनों में अपनी विशेषज्ञ सेवाएँ प्रदान करते हैं। हिन्दी न सिर्फ भाषा के रूप में भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है।



बहुत सहज, सरल और सुगम भाषा होने के कारण हिन्दी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है, जिसे दुनियाभर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। प्रवासी भारतीयों के मध्य सामंजस्य और तालमेल के लिए हिन्दी भाषा का योगदान अमूल्य है। जब कोई भारतीय विदेश में रह रहे प्रवासी भारतीयों से मिलता है या विदेश के कोई संस्थान में हिन्दी में भाषण या अपनी अभिव्यक्ति देता है तो प्रवासी भारतीयों के मध्य उत्साह देखने को मिलता है। प्रवासी भारतीयों के आंगन में 'हिन्दी' भाषा से नई ऊर्जा का संचय होने लगता है और उनमें भारत देश के प्रति प्रेम और प्रज्वलित होने लगता है।

अतः हिन्दी न केवल देश की एकता का सूत्र है बल्कि ये विश्वभर में निवासित प्रवासी भारतीयों को भी माला में पिरोने का माध्यम है। 14 सितम्बर, 2017 को राजभाषा विभाग द्वारा नई दिल्ली के विज्ञान भवन में हिन्दी समारोह के अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने कहा, "हिन्दी अनुवाद की नहीं बल्कि संवाद की भाषा है। किसी भाषा की तरह हिन्दी भी मौलिक सोच की भाषा है।"

उपरोक्त कथन से स्पष्ट होता है कि भाषा किसी देश में महज विचारों की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि इस देश की सांस्कृतिक और संस्कारिक धरोहर भी है इसलिए कहा जाता है, "प्रवासी हो या वासी, भारतीय होने का गर्व हमेशा बना रहे"। हमारी राजभाषा हिन्दी के कारण प्रवासी भारतीय भारत से जुड़े रहने के साथ-साथ नये जोश से वैश्विक पटल पर भारत देश की विजय पताका लहरा रहे हैं। हिन्दी अपने अपार अभिव्यक्ति सामर्थ्य के बल पर आज के युग की आवश्यकताओं को पूरा करने में पूर्ण सक्षम है। आजादी के पूर्व हिन्दी ने अगर भारतीय नव जागरण की चेतना का वहन किया तो आजादी के बाद राष्ट्रीय निर्माण की प्रेरणा का माध्यम बनी ! अब इसी कड़ी में हिन्दी देश-विदेश में फैले भारतीयों के लिए नेटवर्किंग का माध्यम बनी है। अतः इससे निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दी प्रवासी भारतीयों के जीवन का आधार स्तम्भ है इससे इनकी राष्ट्र के प्रति भागीदारी और अधिक सुनिश्चित होती है।

\*\*\*\*\*



**आज की**  
**साइबर सुरक्षा युक्ति**








**जो दिखता है,  
वो हमेशा  
सच नहीं  
होता है!**

**धोखेबाज विश्वास जीतने और धोखा देने के लिए  
एआई-निर्मित डीपफेक वीडियो का उपयोग करते हैं।  
पहले सत्यापित करें और फिर भरोसा करें !**

Disclaimer: The literature / images / materials (courtesy from various sources viz., internet, photo gallery etc.) used are strictly for the purpose of cyber literacy / education without any commercial purpose intended thereof.





राजभाषा का प्रकाश, बैंक का विकास

41

यूको मरुधरा, अप्रैल-सितंबर 2025



संजय किरार  
मुख्य प्रबंधक  
मंडोर शाखा

## माटी में खोज

हम खोजे गए हैं,  
सदियों से दफन उस माटी में  
माटी जो उगाती है, फसल  
माटी जो बनाती है, घर  
किसी बीज के खोने भर से  
माटी, जो पेड़ बन जाती हैं  
माटी, जो माटी से अलग होकर भी  
रह जाती बस माटी है,  
माटी जिसमें सोया रहता है जल  
जल जिसमें ज़िंदा रहती है माटी  
माटी की कहानी ही अपनी कहानी है  
सदियों से बदलती गई आकृतियाँ,  
समय के साँचों में ढलती रही माटी  
पर माटी का सच कुछ और भी है  
माटी में है उदासी, खुशी, जोश, समर्पण,  
शांति, कांति, सुकून और गंध  
गंध अपने होने की गवाही देती है  
और इसी गंध से बने हैं हम  
इसीलिए अक्सर मिट्टी झाँकती है  
हमारी देह से फिर मिट्टी हो जाने के लिए।

\*\*\*\*\*





आज की

साइबर सुरक्षा युक्ति



सावधान



#आसानपैसा

#झटपटकमाई

#अवैधलेनदेन

अगर कोई आपको  
कमीशन के बदले अपने  
बैंक खाते से पैसा  
ट्रांसफर करने के लिए  
कहता है, तो वे आपको  
**मनी म्यूल** बनाने की  
कोशिश कर रहे हैं।

इसके परिणाम  
गंभीर हो सकते हैं।

Disclaimer: The illustrations / images / materials (courtesy from various sources viz., internet, photo gallery etc.) used are strictly for the purpose of cyber literacy / education without any commercial purpose intended thereof.



ऑनलाइन वित्तीय  
धोखाधड़ी के मामले में  
डायल करें **1930**

किसी भी साइबर अपराध की निवारण के लिए रिपोर्ट करें  
[WWW.CYBERCRIME.GOV.IN](http://WWW.CYBERCRIME.GOV.IN)

नवीनतम अपडेट के लिए फॉलो करें

CYBERDOST



यूको बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)



UCO BANK

(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust





## यूको बैंक की लॉकर सेवा का लाभ उठाएं ऑनलाइन।

बस UCO mBanking Plus app  
के माध्यम से आवेदन करें।



**UCO mBanking Plus app**

SCAN TO DOWNLOAD



For iOS Users



For Android Users